

2020

उथलपुथल मचाने वाले -
साल 2020 पर एक नजरHappy
New Year

2021

सेन्सर टाइम्स

www.censortimes.com

डाक पंजीयन क्रमांक-एमपी/आईडीसी/1117/2019-2021

वर्ष-17

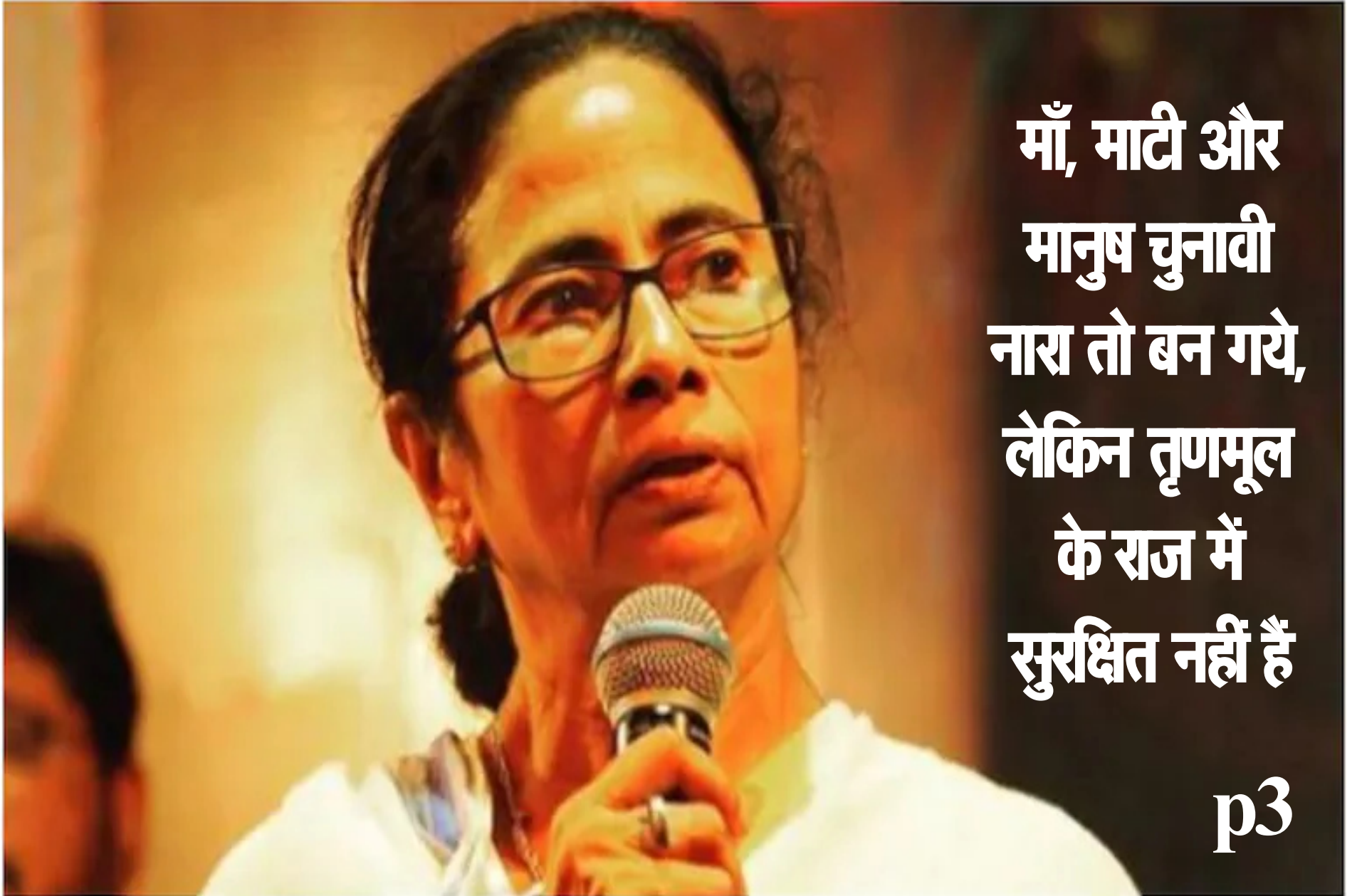
अंक-10

मासिक

1 जनवरी 2021

पृष्ठ-12

मूल्य- पाँच रुपये



माँ, माटी और
मानुष चुनावी
नारा तो बन गये,
लेकिन तृणमूल
के राज में
सुरक्षित नहीं हैं

p3

देश के किसान प्रधानमंत्री मोदी पर विश्वास
नहीं करते-राहुल

p12



कांग्रेस के खिलाफ एनसीपी-शिवसेना
रच रहे साजिश

p12



अन्दर के पृष्ठ पर.....

अल्पसंख्यक की परिभाषा -
दोबारा निर्धारित हो

P-7

शुभेंदु अधिकारी ने भाजपा में-
शामिल होने के फैसला सही

P-3

नये साल में जिंदगी भी बदल जाए-
तो कितना अच्छा रहे

P-2

धनखड़ को हटाने के लिए -
राष्ट्रपति का रुख किया

P-12

सम्पादक की कलम से

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मजेंटा लाइन पर चलने वाली देश की पहली ड्राइवरलेस मेट्रो को हरी झंडी दिखाई। इस मौके पर प्रधानमंत्री ने कहा कि अटलजी के प्रयासों से देश में पहली मेट्रो की शुरुआत हुई थी। जब 2014 में हमारी सरकार बनी उस वक्त केवल 5 राज्यों में मेट्रो सर्विस थी आज 18 शहरों में मेट्रो सर्विस है। 2025 तक हमारा लक्ष्य मेट्रो सर्विस को 25 शहरों में शुरू करना है। दिल्ली में बिना ड्राइवर के ऑटोमेटिक चलती मेट्रो ट्रेन चालू हो गई है।

आज आपकी दिल्ली मेट्रो दुनिया के चर्चित शहरों में शामिल हो गई है। अपनी दिल्ली तेजी से विकास कर रही है। देश की पहली ड्राइवरलेस मेट्रो 38 किलोमीटर लंबी मजेंटा लाइन पर चलेगी। 390 किलोमीटर में दिल्ली मेट्रो का नेटवर्क दिल्ली समेत आसपास के नोएडा, गुरुग्राम, फरीदाबाद, गाजियाबाद जैसे शहरों को जोड़ता है। दिल्ली मेट्रो देश की सबसे बड़ी मेट्रो सेवा है। पहली बार इसका परिचालन 24 दिसम्बर, 2002 को शाहदरा और तीस हजारी स्टेशनों के बीच 8.4 किमी मार्ग पर हुआ था। मजेंटा लाइन दिल्ली में जनकपुरी वेस्ट और नोएडा बोटेनिकल गार्डन को जोड़ती है। इसी लाइन पर यह पहली ड्राइवरलेस ट्रेन तकनीक शुरू हुई है।

इस तकनीक को 2021 के मध्य तक पिंक लाइन (मजलिस पार्वशिव विहार) पर भी शुरू करने की योजना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उद्घाटन के बाद भाषण के दौरान कहा कि उन्हें तीन साल पहले मजेंटा लाइन के उद्घाटन का सौभाग्य मिला था और आज फिर इसी रूट पर देश की पहली ऑटोमेटिक मेट्रो ट्रेन का उद्घाटन करने का अवसर मिला है। उन्होंने कहा ये दिखाता है कि भारत कितनी तेजी से स्मार्ट सिस्टम की तरफ बढ़ रहा है। डीएमआरसी के मुताबिक अभी भी ज्यादातर ट्रेन को रिमोट कंट्रोल के द्वारा ऑपरेशन रूम से नियंत्रित किया जाता है, जिसे ऑपरेशन कंट्रोल सेंटर या ओसीसी कहते हैं। यहां से इंजीनियरों की टीमें पूरे नेटवर्क में रियल टाइम ट्रेन मूवमेंट पर नजर रखती है। ये एयर ट्रेफिक कंट्रोल की तरह होता है। डीएमआरसी के पास अभी तीन ओसीसी हैं जो दो मेट्रो मुख्यालय के अंदर और एक शास्त्री पार्क में हैं।

डीएमआरसी ने बताया कि यह ड्राइवरलेस ट्रेन पूरी तरह सुरक्षित है। उन्होंने बताया कि मेट्रो को चलाने से जुड़े कई काम पहले से ही ऑटोमेटिक हैं। हाई रिजाल्यूशन के केमेरे लग जाने से ट्रेक पर केबिन से नजर रखने की जरूरत नहीं होगी। इस नए प्लान के मुताबिक ट्रेक और ट्रेन के ऊपर से गुजरने वाली तारों पर लगातार नजर रखी जाएगी और आपातकाल की स्थिति में तुरंत कदम उठाया जा सकेगा। कमिशनर ऑफ रेलवे सेफ्टी (सीएमआरएस) जिसने 18 दिसम्बर को बिना ड्राइवर के ट्रेन की अनुमति दी थी। उनका ये सुनिश्चित करने का निर्देश है कि कमांड सेंटर पर सब कुछ साफ दिखे और ट्रेन पर लगे कैमरों को नमी से मुक्त रखा जाए।

डीएमआरसी के मुताबिक उन्होंने प्रणालियों के निरीक्षण और समीक्षा के लिए एक सलाहाकार भी नियुक्त किया है। इसकी रिपोर्ट डीएमआरसी, सीएमआरएस को परिचालन शुरू होने के बाद देगा। कमांड सेंटर पर इफार्मेशन कंट्रोलर होंगे जोकि यात्रियों और भीड़ की मानिट्रिंग करेंगे। इसके अलावा ट्रेन से जुड़ी दूसरी जानकारीयों और सीसीटीवी की भी लगातार मानिट्रिंग की जाएगी। यात्रियों में ड्राइवरलेस ट्रेनों में बैठने का डर तो रहेगा। पर समय के साथ जब वह कॉविस हो जाएंगे कि यह ट्रेन सुरक्षित है तो यह डर भी खत्म हो जाएगा।

नये साल में कैलेंडर के साथ जिंदगी भी बदल जाए तो कितना अच्छा रहे

प्रो. संजय द्विवेदी

मनुष्य की जिजीविषा ही उसकी शक्ति है, इसलिए खराब हालात के बाद भी, टूटे मन के बाद भी लगता है कि सब कुछ ठीक होगा और एक सुंदर दुनिया बनेगी। 2021 का साल इस मायने में बहुत सारी उम्मीदों का साल है, टूटे सपनों को पूरा करने के लिए फिर से जुटने का साल है।

यह साल जा रहा है, बहुत-सी कड़वी यादें देकर। कोरोना और उससे उपजे संकटों से बने बिंब और प्रतिबिंब आज भी आंखों में तैर रहे हैं और डरा रहे हैं। यह पहला साल है, जिसने न जाने कितने जानने वालों की मौत की सूचनाएं दी हैं। पहले भी बीमारियां आईं, आपदाएं आईं किंतु उनका एक वृत्त है, भूगोल है, उनसे प्रभावित कुछ क्षेत्र रहे हैं। यह कोरोना संकट तो अजब है, जहां कभी भी और कोई भी मौत की तरह दर्ज हो रहा है। इस बीमारी की मार चौतरफा है रोजी पर, रोजगार पर, तनखाह पर, शिक्षा पर, समाज पर और कहाँ नहीं। डरे हुए लोग रोज उसके नए रूपों की सूचनाओं से हैरत में हैं। बचा-खुचा काम वाट्सएप और अन्य सामाजिक माध्यमों पर ज्ञान और सूचनाएं उड़ेलते लोग कर रहे हैं। यह कितना खतरनाक है कि हम चाहकर भी कुछ कर नहीं पा रहे। अपनी अस्त-व्यस्त होती जिंदगी और उसे तिल-तिल खत्म होता देखने के सिवा। ऐसे में नए साल का इंतजार भी है और भरोसा भी है कि शायद चीजें बदल जाएं। कैलेंडर का बदलना, जिंदगी का बदलना हो जाए। नया साल उम्मीदों का भी है, सपनों का भी। उन चीजों का भी जो पिछले साल खो गयीं या हमसे छीन ली गयीं।

मनुष्य की जिजीविषा ही उसकी शक्ति है, इसलिए खराब हालात के बाद भी, टूटे मन के बाद भी लगता है कि सब कुछ ठीक होगा और एक सुंदर दुनिया बनेगी। 2021 का साल इस मायने में बहुत सारी उम्मीदों का साल है, टूटे सपनों को पूरा करने के लिए फिर से जुटने का साल है। 2020 की बहुत सारी छवियां हैं, करोना से टूटते लोग हैं, महानगरों से गांवों को लौटते लोग हैं, बीमारी से मौत की ओर बढ़ते लोग हैं, नौकरियां खोते और गहरी असुरक्षा में जीते हुए लोग हैं। मनुष्य इन्हीं आपदाओं से जूझकर आगे बढ़ता है और पाता है पूरा आकाश। इसीलिए श्री अटल बिहारी वाजपेयी लिख पाए-

जड़ता का नाम जीवन नहीं है,
पलायन पुरोगमन नहीं है।
आदमी को चाहिए कि वह जूझे
परिस्थितियों से लड़े,
एक स्वप्न टूटे तो दूसरा गढ़े।

हमें अपने सपनों को सच करना है, हर हाल में। आपदा को अवसर में बदलते हुए आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते हुए। इस जाते हुए साल ने हमें दर्द दिए हैं, आंसू दिए हैं पर वह हमें तोड़ नहीं पाया है। न हमारी जिजाविषा को, न हमारे मन को, न ही जीवन की गति को। नए अवसरों और नए रास्तों की तलाश में यह सारा वर्ष गुजरा है। हमारा समय, संवाद और शिक्षा सब कुछ डिजिटल होती दिखी। अब कक्षाओं का डिजिटल होना भी एक सच्चाई है। संवाद, वार्तालाप, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों को डिजिटल माध्यमों पर करना संभव हुआ है। इसे ज्यादा सरोकारी, ज्यादा प्रभावशाली बनाने की विधियां निरंतर खोजी जा रही हैं। इस दिशा में सफलता भी मिल रही है। गूगल मीट, जूम, जियो मीट, स्काइप जैसे मंच आज की डिजिटल बैठकों के सभागार हैं। जहां निरंतर सभाएं हो रही हैं, विमर्श निरंतर है और संवाद 24x7 है। कहते हैं डिजिटल मीडिया का सूरज कभी नहीं डूबता। वह सदैव है, सक्रिय है और चैतन्य भी। हमारे विचार, व्यवहार और आदतों में भी बदलाव साफ दिख रहा है। हम बदल रहे हैं, देश बदल रहा है। अब वह पुराने साल को बिसार कर नए साल में नई आदतों के साथ प्रवेश कर रहा है। ये आदतें सामाजिक व्यवहार की भी हैं और निजी जीवन की भी। यह व्यवहार और आदतों को भी बदलने वाला साल है। स्वास्थ्य, सुरक्षा और डिजिटल दुनिया की त्रिआयामी कड़ी ने इस जाते हुए साल को खास बनाया है। 2020 ने हमें प्रकृति के साथ रहना सिखाया, पर्यावरण के प्रति ममत्व पैदा किया तो 'हाथ जोड़कर नमस्कार' को विश्व पटल पर स्थापित कर दिया। साफ-सफाई के प्रति हमें चैतन्य किया। इसका असर भी दिखा- साफ आसमान, साफ नदियां, खिला-खिला-सा पूरा वातावरण, चहचहाते पक्षी कुछ कह रहे थे। दर्द देकर भी इसने बहुत कुछ सिखाया है, समझाया है। हमें कीमत समझायी है-

अपनी जमीन की, माटी की, गांव की और रिश्तों की। परिवार की वापसी हुई है। जिसे हमारे विद्वान वक्ता श्री मुकुल कानिटकर 'घरवास' की संज्ञा दे रहे हैं। लॉकडाउन में जीवन के नए अनुभवों ने हमें बहुत कुछ सिखाया है। नई पदावली से हम परिचित हुए हैं। एक नए जीवन ने हमारी जीवनशैली में प्रवेश किया है।

हम कोरोना से सीखकर एक नई जिंदगी जी रहे हैं। बीता हुआ समय हमें अनेक तरह से याद आता है। हम सब स्मृतियों के संसार में ही रहते हैं। बीते साल की ये यादें हमें बताएंगी कि हमने किस तरह इस संकट से जूझकर इससे निजात पाई थी। किस तरह हमारे कोरोना योद्धाओं ने हमें इस महासंकट से जूझना और बचना सिखाया। अपनी जान पर खेलकर हमें जिंदगी दी। वे चिकित्सा सेवाओं के लोग हों, पुलिसकर्मी हों, पत्रकार हों या विविध सेवाओं से जुड़े लोग सब अग्रिम मोर्चे पर तैनात थे। बहुत सारे सामाजिक संगठनों और निजी तौर पर लोगों ने राहत पहुंचाने के भी अनथक प्रयास किए, इसकी जितनी प्रशंसा की जाए वह कम है। किस तरह हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक राष्ट्रीयक की तरह देश को जोड़कर इस संकट में साथ रहना और संकटों से जूझने की शक्ति दी। कल्पना कीजिए उन जैसा नायक न होता तो हमारा क्या होता? उनके प्रेरित करने वाले वक्तव्यों ने, संवादों ने हमें संबल दिया और घने अंधेरे और कठिन समय में भी हम संबल बनाकर रख सके। संवाद और संचार कैसे टूटे मनो को जोड़ने का काम करता है और एक आदर्श संचारक इस शक्ति का कैसे उपयोग करता है, हमारे प्रधानमंत्री इसके उदाहरण हैं। इस साल ने हमें मनुष्य बने रहने का संदेश दिया है। अहंकार और अकड़ को छोड़कर विनीत बनने की सीख हमें मिली है। क्योंकि प्रकृति की मार के आगे किसी की नहीं चलती और बड़े-बड़े सिधे हो जाते हैं। प्रकृति से संवाद और प्रेम का रिश्ता हमें बनाना होगा, तभी यह दुनिया रहने लायक बचेगी। महात्मा गांधी ने कहा था -पृथ्वी हर मनुष्य की जरूरत को पूरा कर सकती है, परंतु पृथ्वी मनुष्य के लालच को पूरा नहीं कर सकती है।

नए साल 2021 की पहली सुबह का स्वागत करते हुए हम एक अलग भाव से भरे हुए हैं। इस साल ने तमाम बुरी खबरों के बीच उजास जगाने वाली खबरें भी दी हैं, अयोध्या में राममंदिर की नींव का रखा जाना, नए संसद भवन का शिलान्यास, नई राष्ट्रीय शिक्षा का आना, राष्ट्रीय भर्ती एजेंसी की परिकल्पना, सेना में महिलाओं को स्थाई कमीशन के साथ बोडो गुप और सरकार के बीच समझौता साधारण खबरें नहीं हैं। इसके साथ ही हमारी राजनीति, संस्कृति और साहित्य की दुनिया के अनेक नायक हमें इस साल छोड़कर चले गए उसका दुख भी विरल है। जिनमें पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी, राजनेता रामविलास पासवान, जसवंत सिंह, अहमद पटेल, अजीत जोगी, रघुवंश प्रसाद सिंह, अमर सिंह, लालजी टंडन, तरुण गोगोई, पूर्व क्रिकेटर और उग्र सरकार के मंत्री चेतन चौहान, एमडीएच मसाले के महाशय धर्मपाल गुलाटी, पत्रकार अश्विनी कुमार चोपड़ा, ललित सुरजन, राजीव कटारा, मंगलेश डबराल, वरिष्ठ पत्रकार और समाज चिंतक मा.गो. वैद्य, रंगकर्मी ऊषा गांगुली, उपन्यासकार कृष्ण बलदेव वैद्य, गिरिराज किशोर, राहत इंदौरी, विष्णुचंद्र शर्मा, अहद प्रकाश जैसे अनेक नाम हैं, जिनकी याद हमें लंबे समय तक आती रहेगी। इन विभूतियों का न होना एक ऐसा शून्य रच रहा है जिसे भर पाना कठिन है।

बावजूद इसके उम्मीद है कि नववर्ष सारे संकटों से निकाल कर नया उजाला हमारी जिंदगी में लाएगा। उस रौशनी से हिंदुस्तान फिर से जगमगा उठेगा। एक नया भारत बनने की ओर है, यह आकांक्षायान भारत है, उत्साह से भरा, उमंगों से भरा, नए सपनों से उत्साहित और नयी चाल में ढलने को तैयार। निराला जी की इन पंक्तियों की तरह-

नव गति, नव लय, ताल-छंद नव
नवल कंठ, नव जलद-मन्द रव;
नव नभ के नव विहग-वृंद को
नव पर, नव स्वर दे!

माँ, माटी और मानुष चुनावी नारा तो बन गये, लेकिन तृणमूल के राज में सुरक्षित नहीं हैं



भाजपा का कहना है कि अब तक की राजनैतिक हिंसा में बंगाल में उनके 100 से ऊपर कार्यकर्ताओं की हत्या हो चुकी है। यह किसी से छुपा नहीं है कि बंगाल में चाहे स्थानीय चुनाव ही ज्यों न हों, चुनावों के दौरान हिंसा आम बात है।

ज. नीलम मोह

बंगाल एक बार फिर चर्चा में है। गुरुदेव रबिन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद, सुभाष चंद्र बोस, अरबिंदो घोष, बंकिमचन्द्र चैटर्जी जैसी महान विभूतियों के जीवन चरित्र की विरासत को अपनी भूमि में समेटे यह धरती आज अपनी सांस्कृतिक धरोहर नहीं बल्कि अपनी हिंसक राजनीति के कारण चर्चा में है।

वैसे तो ममता बनर्जी के बंगाल की मुख्यमंत्री के रूप में दोनों ही कार्यकाल देश भर में चर्चा का विषय रहे हैं। चाहे वो 2011 का उनका कार्यकाल हो जब उन्होंने लगभग 34 साल तक बंगाल में शासन करने वाली कम्युनिस्ट पार्टी को भारी बहुमत के साथ सत्ता से बेदखल करके राज्य की पहली महिला मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली हो। या फिर वो 2016 हो जब वो 294 सीटों में से 211 सीटों पर जीतकर एक बार फिर पहले से अधिक ताकत के साथ राज्य की मुख्यमंत्री बनीं। दीदी एक प्रकार से बंगाल में विपक्ष का ही सफाया करने में कामयाब हो गई थीं।

क्योंकि विपक्ष के नाम पर बंगाल में तीन ही दल हैं जिनमें से कम्युनिस्ट के 34 वर्ष के कार्यकाल और उसकी कार्यशैली ने ही बंगाल में उसकी जड़ें कमजोर करीं तो कांग्रेस बंगाल समेत पूरे देश में ही अपनी जमीन तलाश रही है। लेकिन वो बीजेपी जो 2011 तक मात्र 4 प्रतिशत वोट शेयर के साथ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बंगाल में अपना अस्तित्व तलाश रही थी, 2019 में 40 प्रतिशत वोट शेयर के साथ तृणमूल को उसके ही गढ़ में ललकारती

है। बल्कि 295 की विधानसभा में 200 सीटों का लक्ष्य रखकर दीदी को बेचैन भी कर देती है। इसी राजनैतिक उठापटक के परिणामस्वरूप आज उसी बंगाल की राजनीति में भूचाल आया हुआ है। लेकिन जब बात राजनीतिक दौंव पेंच से आगे निकल कर हिंसक राजनीति का रूप ले ले तो निश्चित ही देश भर में चर्चा ही नहीं गहन मंथन का भी विषय बन जाती है। क्योंकि जिस प्रकार से आए दिन तृणमूल और भाजपा के कार्यकर्ताओं की हिंसक झड़प की खबरें सामने आती हैं वो वहाँ की राजनीति के गिरते स्तर को ही उजागर करती हैं।

भाजपा का कहना है कि अब तक की राजनैतिक हिंसा में बंगाल में उनके 100 से ऊपर कार्यकर्ताओं की हत्या हो चुकी है। यह किसी से छुपा नहीं है कि बंगाल में चाहे स्थानीय चुनाव ही क्यों न हों, चुनावों के दौरान हिंसा आम बात है। लेकिन जब यह राजनैतिक हिंसा बंगाल की धरती पर होती है, तो उसकी पृष्ठभूमि में 'माँ माटी और मानुष' का नारा होता है जो माँ माटी और मानुष इन तीनों शब्दों की व्याख्या को संकुचित करने का मनोविज्ञान लिए होता है। इसी प्रकार जब वहाँ की मुख्यमंत्री बंगाल की धरती पर खड़े होकर गैर बंगला भाषी को 'बाहरी' कहने का काम करती हैं तो वो भारत की विशाल सांस्कृतिक विरासत के आभामंडल को अस्वीकार करने का असफल प्रयास करती नज़र आती हैं। क्योंकि गुलामी के दौर में जब अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ इस देश के अलग-अलग हिस्सों से अलग-अलग आवाज़ें उठ रही थीं तो वो बंगाल की ही

धरती थी जहाँ से दो ऐसी आवाज़ें उठी थीं जिसने पूरे देश को एक ही सुर में बांध दिया था। वो बंगाल का ही सुर था जिसने पूरे भारत की आवाज़ को एक ही स्वर प्रदान किया था। वो स्वर जिसकी गूँज से ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिलने लगी थी। वो गूँज जो कल तक इस धरती पुत्रों के इस पुण्य भूमि के प्रति प्रेम त्याग और बलिदान का प्रतीक थी वो आज इस देश की पहचान है।

जी हाँ 'वंदे मातरम' का नारा लगाते देश भर में न जाने कितने आज़ादी के मतवाले इस मिट्टी पर हंसते हंसते कुर्बान हो गए। आज वो नारा हमारा राष्ट्रगीत है और इसे देने वाले बंकिमचन्द्र चैटर्जी जिस भूमि की वंदना कर रहे हैं वो मात्र बंगाल की नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र की है। रबिन्द्रनाथ टैगोर द्वारा लिखित 'जन गण मन' केवल बंगाल की नहीं हमारे भारत राष्ट्र की पहचान है। इसी प्रकार 1893 में विश्व धर्म सभा में स्वामी विवेकानंद ने सनातन धर्म की व्याख्या करते समय भारत देश का प्रतिनिधित्व किया था बंगाल का नहीं। बंगाल की धरती ऐसे अनेकों उदाहरणों से भरी पड़ी है। और जब ऐसी धरती से देश के अन्य राज्य के नागरिक के लिए 'बाहरी' शब्द का प्रयोग किया जाता है वो भी वहाँ की मुख्यमंत्री के द्वारा वो केवल बंगाल की महान सांस्कृतिक विरासत का ही अपमान नहीं होता बल्कि देश के संविधान को भी नकारने का प्रयास होता है। दरसअल जब राजनैतिक स्वार्थ राष्ट्र हित से ऊपर होता है तो इस प्रकार के आचरण सामने आते हैं। लेकिन दीदी को समझना चाहिए कि वर्तमान राजनैतिक पटल पर अब इस प्रकार की राजनीति का कोई स्थान नहीं है।

बंगाल के आने वाले चुनावों की तैयारी करने से पहले उन्हें देश में हुए कुछ ताज़ा चुनाव परिणामों पर नज़र डाल लेनी चाहिए ताकि उन्हें वोटर का मनोविज्ञान समझने में आसानी हो। किसान आंदोलन के बीच राजस्थान जिला परिषद और पंचायत के ताज़ा चुनावों में किसान आंदोलन का समर्थन करने वाले दलों को जनता नकार देती है।

असम में तिवा स्वायत्त परिषद के चुनाव में बीजेपी को 36 में से 33 सीटें देकर वहाँ की जनता अलगाववाद की बात करने वाले संगठनों को पूरी तरह से बाहर का रास्ता दिखा देती है। इसी प्रकार हाल ही में जम्मू-कश्मीर के डीडीसी चुनावों में धारा 370 की वकालत करने वाले छह दलों के गुपकार गठबंधन को भी जनता अस्वीकार कर देती है। यह कुछ ऐसे उदाहरण हैं जो देश में भविष्य की राजनीति की बदलती दिशा की ओर इशारा कर रहे हैं। यह इस बात का संकेत है कि वोट बैंक की राजनीति अब जीत की कुंजी नहीं रही।

लेकिन फिर भी अगर बंगाल की वोट बैंक की राजनीति की बात करें तो वहाँ का वोट चार दलों में बंटता है। पिछले चुनाव परिणाम बताते हैं कि तृणमूल का वोट शेयर 43 प्रतिशत था और बीजेपी का

40 प्रतिशत। कांग्रेस 5 प्रतिशत और कम्युनिस्ट पार्टी लगभग 4 प्रतिशत। पिछले दो तीन चुनावों में (लोकसभा और विधानसभा मिलाकर) तृणमूल का वोट शेयर बरकरार है जबकि कांग्रेस के कम्युनिस्ट पार्टी के साथ मिलकर चुनाव लड़ने से भाजपा को फायदा होता है। और चूँकि इस बार 2014 से ही भाजपा ने बंगाल में जमीनी स्तर पर काम किया है तो कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी से हताश बंगाल के लोगों को मोदी ब्रांड भाजपा में तृणमूल का एक सशक्त विकल्प नज़र आ रहा है। रही सही कसर ममता सरकार की ही मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति पूरी कर सकती है जो काफी हद तक वहाँ के गैर मुस्लिम वोटों के ध्रुवीकरण का एक मजबूत कारण बन सकती है। इसलिए दीदी को समझना चाहिए कि इस दौर में नकारात्मक राजनीति से सकारात्मक परिणाम मिलने मुश्किल हैं। लेकिन दीदी के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह है कि इस बार उनका मुकाबला विपक्ष के नाम पर वोट बैंक की राजनीति करने वाले या कर्जु माफी जैसे खोखले नारे देने वाले किसी दल से ना होकर बूथ लेवल पर काम करने वाले संगठन से है। इसलिए बंगाल का यह चुनाव तृणमूल बनाम भाजपा मात्र दो दलों के बीच का चुनाव नहीं रह गया है बल्कि यह चुनाव देश की राजनीति के लिए भविष्य की दिशा भी तय करेगा। बंगाल की धरती शायद एक बार फिर देश के राजनैतिक दलों की सोच और कार्यशैली में मूलभूत बदलाव की क्रांति का आगाज़ करे।

शुभेंदु अधिकारी ने भाजपा में शामिल होने के फैसले को बताया सही, बोले- जनता ने भी किया मंजूर

भाजपा में शामिल हुए पूर्व मंत्री शुभेंदु अधिकारी ने कहा कि रोड शो दर्शाता है कि मैंने सही फैसला लिया और इसे जनता की मंजूरी मिली है। रोड शो के दौरान मेचेड़ा बाइपास से सेंट्रल बस स्टैंड तक पांच किलोमीटर का सफर तय करने में लगभग तीन घंटे लग गए।



कांठी-तृणमूल कांग्रेस छोड़कर हाल ही में भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए पूर्व मंत्री शुभेंदु अधिकारी ने कहा कि उन्होंने भाजपा में शामिल होकर बिल्कुल सही किया और जनता ने इसे मंजूर किया है। अधिकारी ने अपने गढ़ कांठी में विशाल रोड शो करते हुए घोषणा की कि वह आठ जनवरी को नंदीग्राम में एक रैली को संबोधित करेंगे। इससे एक दिन पहले मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का भी ऐसा ही कार्यक्रम है।

उन्होंने कहा कि रोड शो दर्शाता है कि मैंने सही फैसला लिया और इसे जनता की मंजूरी मिली है। रोडशो के दौरान मेचेड़ा बाइपास से सेंट्रल बस स्टैंड तक पांच किलोमीटर का सफर तय करने में लगभग तीन घंटे लग गए। रोड शो दोपहर ढाई बजे शुरू होकर और शाम साढ़े पांच बजे खत्म हुआ। इस दौरान हजारों की तादाद लोग सड़कों पर उतर आए। अधिकारी ने भाजपा नेता के तौर पर अपने गढ़ में पहली रैली को संबोधित करते हुए कहा कि सात जनवरी को आपका (ममता) नंदीग्राम आने पर स्वागत किया जाएगा और आप वहाँ जो बात कहेंगी, उसका जवाब में अगले दिन दूंगा।

राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक मोर्चे पर उथलपुथल मचाने वाले साल 2020 पर एक नजर



श्रीव कुमार त्रि

राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक मोर्चे पर उथलपुथल मचाने वाले साल 2020 पर एक नजर कोरोना के शुरुआती दौर में छुआछूत जैसी सोच भी दिखाई दी जब लोग अपने ही परिजनों से बीमारी के समय दूरी बनाने लगे। परिचितों, परिजनों के अंतिम दर्शन ना कर पाने की पीड़ा भी लोगों को सहनी पड़ी तो साथ ही त्योहारों को अकेले मनाना पड़ा।

नये वर्ष की शुरुआत नागरिकता कानून में संशोधन के खिलाफ दिसंबर 2019 से जारी विरोध प्रदर्शनों के बीच हुई और साल का अंत किसान आंदोलन से हो रहा है। आंदोलन से शुरू हुए और आंदोलन पर खत्म हुए साल 2020 में कोरोना वायरस ने ऐसा कहर बरपाया कि अर्थव्यवस्था त्राहिमाम कर उठी। एक ओर कोरोना अपना प्रभाव फैलाता रहा तो दूसरी ओर भारतीयों ने भी अपनी इम्युनिटी बढ़ाते हुए, मास्क लगाते हुए, दो गज की दूरी के नियम का पालन करते हुए कोरोना का पूरी दृढ़ता के साथ मुकाबला किया। साल का अंत आते-आते कोरोना के मामलों में गिरावट और अर्थव्यवस्था के सभी मोर्चों पर मिल रही खुशखबरी से अच्छे दिनों के संकेत मिलने लगे हैं लेकिन कोरोना वायरस के नये स्वरूप के उभार ने वैश्विक स्तर पर आशंकाओं के नये बादलों को जन्म दे दिया है।

वर्ष 2020 जहाँ भारत के लिए घटनाओं से भरा रहा वहीं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी कई उलटफेर हुए। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की गद्दी जनता ने पलट दी तो नेपाल के प्रधानमंत्री ने खुद ही संसद को भंग कर दिया। ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में लगी आग ने दुनिया भर के पर्यावरणविदों का ध्यान अपनी ओर खींचा तो कोरोना वायरस के जनक चीन के खिलाफ दुनियाभर में नाराजगी बढ़ी। ओलंपिक खेलों के इतिहास में दुनिया के इस सबसे बड़े खेल आयोजन को स्थगित किया गया तो इटली पहला ऐसा देश बना जिसने राष्ट्रीय स्तर पर लॉकडाउन लगाया। अमेरिका में जॉर्ज फ्लायड की मृत्यु ने वैश्विक स्तर पर रंगभेद के खिलाफ आवाज बुलंद की तो केरल में गर्भवती हथिनी की पटाखा खाने से हुई मृत्यु पर हर किसी की आंखें नम हो गयीं।

वर्क फ्रॉम होम, ऑनलाइन क्लासेज, क्वारंटीन, इम्युनिटी बूस्टर जैसी चीजें आम हो गयीं। कोरोना के शुरुआती दौर में छुआछूत जैसी सोच भी दिखाई दी जब लोग अपने ही परिजनों से बीमारी के समय दूरी बनाने लगे। परिचितों, परिजनों के अंतिम दर्शन ना कर पाने की पीड़ा भी लोगों को सहनी पड़ी तो साथ ही त्योहारों को अकेले मनाना पड़ा। लॉकडाउन के दौरान एक राज्य से दूसरे राज्य में जाने के लिए पास बनवाने के लिए मारामारी हुई तो साथ ही गृह मंत्रालय पूरे साल लॉकडाउन और अन्य पाबंदियों के दिशानिर्देश बनाने और राज्यों से समन्वय करने में ही लगा रहा। इस दौरान देश के कुछ भागों में भारी वर्षा और चक्रवाती तूफानों का भी सामना करना पड़ा तो लॉकडाउन के बाद अनलॉक की प्रक्रिया शुरू होते ही शराब की दुकानें खुलने, ट्रेनों के चलने, हवाई यात्रा बहाल होने, धार्मिक स्थलों के खुलने, सिनेमाघरों के खुलने आदि के दौरान लोगों की खुशी देखने लायक रही।

मास्क, सैनेटाइजर, पीपीई किट अधिकतर बाहर से ही आते थे लेकिन भारत कोरोना काल में इस मामले में पूरी तरह आत्मनिर्भर बन गया। यही नहीं वेंटिलेटर बनाने वाले कई स्टार्टअप भी इस दौरान उभर कर आये। कोरोना काल ने और भी कई बड़े बदलाव किये जैसे कि शादी-विवाह आदि बड़े सादे ढंग से आयोजित किये जाने लगे और नाममात्र के ही रिश्तेदारों की उपस्थिति इन आयोजनों में रहने लगी। लॉकडाउन के दौरान सिनेमाघर बंद हो गये तो दूरदर्शन ने रामायण, महाभारत, श्रीकृष्णा आदि पुराने धारावाहिक शुरू किये जो काफी हिट हुए। यही नहीं लोग वेब सीरिज या ओटीटी प्लेटफॉर्म पर फिल्मों आदि देखकर समय बिताने लगे।

और दाई वर्ष घोषित किया। तब किसे पता था कि वाकई यह वर्ष नसों और दाइयों और डॉक्टरों की अनवरत सेवा लेने वाला वर्ष बन जायेगा।

- 20 जनवरी को भारत की सत्तारूढ़ पार्टी भाजपा ने राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के लिए जगत प्रकाश नड्डा को चुना।

- जनवरी माह में ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तब चिंता बढ़ गयी जब लगा कि अब अमेरिका और ईरान के बीच कभी भी युद्ध हो सकता है। ऐसा तब हुआ जब बगदाद में अमेरिकी हमले में ईरानी सेनाध्यक्ष जनरल कासिम सोलेमानी मारा गया।

- जनवरी माह के अंत में भारत में कोरोना वायरस का पहला मरीज केरल में सामने आया जिसको देखते हुए सरकार चिंतित हो गयी और स्वास्थ्य मंत्रालय एक्शन मोड में आ गया हालांकि हवाई अड्डों पर स्क्रीनिंग - जनवरी मध्य से ही शुरू की जा चुकी थी लेकिन अब स्वास्थ्य मंत्रालय ने विभिन्न समितियों का गठन करके आगे आने वाली बड़ी चुनौती के लिए कमर कस ली थी।

फरवरी 2020

- फरवरी माह की शुरुआत केंद्रीय बजट पेश किये जाने के साथ हुई। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने देश की प्रगति को आगे ले जाने में सहायक बजट पेश किया और कई नई योजनाओं की शुरुआत की जिसमें विवाद से विश्वास तक योजना प्रमुख रही।

- फरवरी माह में संसद में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऐलान किया कि अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के लिए 'श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र' नामक ट्रस्ट का गठन किया है।

- फरवरी माह में दिल्ली विधानसभा चुनावों में आम आदमी पार्टी भारी बहुमत के साथ 63 सीटें हासिल कर सत्ता में लौटी और भाजपा अपना पिछली बार का तीन का आंकड़ा कुछ सुधार कर 8 सीटों पर आकर रुक गयी। कांग्रेस एक बार फिर अपना खाता खोलने में भी नाकामयाब रही।

- 12 फरवरी 2020 का दिन इसलिए लोगों के लिए यादगार बन गया क्योंकि उसी दिन विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना वायरस को कोविड-19 नाम प्रदान किया।

- फरवरी माह में उत्तर प्रदेश की राजधानी में डिफेंस एक्सपो भी आयोजित किया गया जिसमें विदेशी कंपनियों ने देशी कंपनियों के रक्षा उत्पादों को देखा और सराहा। इस दौरान कई विदेशी कंपनियों से रक्षा अनुबंध भी हुए।

- फरवरी में सुप्रीम कोर्ट ने एक बड़ा निर्णय देते हुए कहा कि राजनीतिक दलों को अपने उम्मीदवारों का आपराधिक ब्यौरा भी सार्वजनिक करना होगा।

- फरवरी में ही सुप्रीम कोर्ट ने एक और ऐतिहासिक निर्णय देते हुए सेना में महिला अधिकारियों को स्थायी कमीशन देने का आदेश दिया।

- फरवरी में सुप्रीम कोर्ट ने शाहीन बाग के आंदोलनकारियों को समझाने के लिए एक कमेटी का भी गठन किया लेकिन आंदोलनकारियों ने इनकी बात नहीं सुनी और सीएए कानून वापस लेने की मांग पर अड़े रहे। - फरवरी में तब भारत की ओर पूरे विश्व की निगाहें गड़ गयीं जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पूरे दलबल के साथ भारत की यात्रा पर आये और अहमदाबाद में नमस्ते ट्रंप कार्यक्रम में हिस्सा लिया। विश्व के सबसे बड़े स्टेडियम में हुए इस कार्यक्रम में लाखों लोगों ने ट्रंप का अभिवादन किया।

- फरवरी माह में राजधानी दिल्ली दंगों की चपेट में आ चुकी थी। दंगों में कई लोग मारे गये और संपत्ति को भी काफी नुकसान हुआ।

- फरवरी माह में कोरोना वायरस चीन के वुहान में रौद्र रूप दिखाते लगा था इसलिए सरकार ने वहां फंसे हुए अपने लोगों को निकालने का अभियान शुरू किया और उन्हें भारत लाकर पहले क्वारंटीन सेंटर में रखा गया और वहां से घर भेजा गया।

मार्च 2020

- मार्च में बड़ी राजनीतिक हलचल तब हुई जब

देखा जाये तो कोरोना ने दुनियाभर की चाल थामने का भरसक प्रयास किया लेकिन भारतीय हर क्षेत्र में आगे बढ़ते रहे। हमारी सेना आधुनिक हथियारों से सुसज्जित होती रही। इसरो और डीआरडीओ नवीनतम प्रौद्योगिकियों से देश को ताकतवर बनाते रहे। इसी साल दुनिया की सबसे लंबी सुरंग का उद्घाटन हुआ तो साथ ही अयोध्या में भव्य राम मंदिर निर्माण के लिए भूमि पूजन और संसद के नये भवन के निर्माण कार्य के लिए भूमि पूजन कर प्रधानमंत्री ने नया इतिहास रचा। बॉलीवुड भी साल 2020 में खासा चर्चित रहा क्योंकि सुशांत सिंह राजपूत की मौत मामले में सीबीआई जाँच में तमाम उतार-चढ़ाव आते रहे। मुंबई पुलिस की जाँच पर सवाल उठे, ड्रग्स मामले में एनसीबी ने कई बड़े फिल्मी सितारों से पूछताछ की। फिल्म अभिनेत्री कंगना रनौत के कथित अवैध निर्माण को बीएमसी ने ढहाया तो कंगना ने उद्धव सरकार पर जमकर हमला बोला। इसके अलावा कोरोना की दवाई लाने का दावा करने वाले बाबा रामदेव को आयुष मंत्रालय ने तब झटका दे दिया जब सरकार की ओर से कहा गया कि पतंजलि ने इम्युनिटी बढ़ाने की दवा का लाइसेंस मांगा था ना कि कोरोना रोधी दवा बनाने का।

आइये अब एक नजर महीने दर महीने के हिसाब से साल 2020 की प्रमुख घटनाओं पर डालते हैं।

जनवरी 2020

- नये साल की शुरुआत में देश को सेनाध्यक्ष के रूप में मनोज मुकुंद नरवणे मिले तो देश के पहले सीडीएस के रूप में बिपिन रावत की नियुक्ति हुई।

- जनवरी माह में ही डब्ल्यूएचओ ने वर्ष 2020 को नर्स

का दायरा नवंबर अंत तक बढ़ाने की घोषणा की।

– महीने के अंत में भारत सरकार ने चीन के 59 मोबाइल एप्स को भी प्रतिबंधित कर दिया क्योंकि यह भारतीयों का डेटा चुरा रहे थे।

जुलाई 2020

– उत्तर प्रदेश का मोस्ट वॉन्टेड गैंगस्टर विकास दुबे आखिरकार उसी कानपुर में पुलिस की गोलियों का शिकार बन गया, जिस कानपुर से उसने खौफ का कारोबार किया। एसटीएफ की टीम उसे उज्जैन से लेकर कानपुर आ रही थी। अचानक ही एसटीएफ की गाड़ी पलटी और विकास दुबे पुलिस वालों के हथियार छीनकर भागने की कोशिश करने लगा और इसी दौरान पुलिस ने जवाबी कार्रवाई की जिसमें विकास दुबे मारा गया।

– दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल ने देश के पहले प्लाज्मा बैंक का उद्घाटन किया।

– भारत बायोटेक ने कोरोना वैक्सीन कौवेक्सिन के मानव पर पहले चरण के ट्रायल शुरू किये।

– जुलाई महीने में प्रसिद्ध कोरियोग्राफर सरोज खान और अभिनेता जगदीप का निधन हो गया।

– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आत्मनिर्भर भारत एप एनोवेशन चैलेंज शुरू किया

– प्रधानमंत्री मोदी ने लद्दाख जाकर चीन को चेतावनी दी और गलवान घाटी में हुए संघर्ष के दौरान घायल हुए सैनिकों का हाल जाना।

– भारतीय रेलवे ने 151 ट्रेनें निजी कंपनियों की ओर से चलाने का प्रस्ताव रखा।

– भारतीय नौसेना ने विदेशों में फँसे भारतीयों को वापस लाने का अभियान %ऑपरेशन सेतु% संपन्न किया।

– अमिताभ बच्चन, उनके बेटे अभिषेक और बहू ऐश्वर्या कोरोना पॉजिटिव पाये गये।

– नेपाल सरकार ने दूरदर्शन को छोड़कर बाकी सभी भारतीय समाचार चैनलों पर प्रतिबंध लगाया।

– राजस्थान सरकार में हुई बगावत, उपमुख्यमंत्री पद से सचिन पायलट को हटाया गया। कई सप्ताह तक चले राजनीतिक ड्रामे के दौरान सचिन पायलट और उनके समर्थक विधायक गुरुराम के एक रिसॉर्ट में डेरा डाले रहे।

– केंद्र सरकार ने इसी माह अंतरराष्ट्रीय उड़ानों की शुरुआत की घोषणा की। हालांकि कुछ ही देशों की विदेशी उड़ानों को इसके तहत मंजूरी दी गयी थी।

– कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों को देखते हुए वार्षिक अमरनाथ यात्रा को रद्द कर दिया गया।

– एंटी टैंक गाइडेड मिसाइल ध्रुवास्त्र का सफल परीक्षण किया गया।

– झारखंड सरकार ने मास्क नहीं पहनने और कोरोना दिशानिर्देशों का पालन नहीं करने पर 1 लाख रुपए जुर्माना और 2 साल की जेल का प्रावधान किया।

– भारत सरकार ने 47 और चाइनीज एप्स पर प्रतिबंध लगाया।

– प्रधानमंत्री मोदी ने मॉरीशस के सुप्रीम कोर्ट की बिल्डिंग का अनावरण किया।

– गृह मंत्रालय ने जिम, योगा केंद्र को खोलने की अनुमति दी।

– पांच राफेल विमान अंबाला एयर बेस पहुँचे जहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ।

– एचआरडी मिनिस्ट्री का नाम बदल कर शिक्षा मंत्रालय हुआ और नयी शिक्षा नीति 2020 प्रस्तुत की गयी।

– इसरो ने निजी क्षेत्र को श्रीहरिकोटा में अपने लॉन्च पैड स्थापित करने की अनुमति दी।

सितम्बर 2020

– रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने रूस में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन की बैठक में हिस्सा लिया और इस बैठक से इतर चीनी रक्षा मंत्री के साथ बातचीत भी की।

– केंदीय मंत्रिमंडल ने सिविल सर्विस अधिकारियों के लिए %कर्मयोगी% मिशन को हरी झंडी दी है। इसके तहत खास प्रशिक्षण दिया जायेगा। कर्मयोगी मिशन National Programme for civil services capacity building (NPCSCB) के तहत चलाया जायेगा।

– भारत सरकार ने सितम्बर माह में एक और डिजिटल स्ट्राइक करते हुए पबजी मोबाइल गेम समेत 118 चीनी एप्स पर प्रतिबंध लगा दिया। इससे पहले भी सरकार कई एप्स पर प्रतिबंध लगा चुकी है।

– हैकरों ने सितम्बर माह में तब सनसनी फैला दी जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पर्सनल वेबसाइट के ट्विटर अकाउंटको हैक कर लिया गया। हैकर ने कोविड-19 रिलीफ फंड के लिए डोनेशन में बिटक्रॉइन की मांग की। हालांकि तुरंत ये ट्वीट्स डिलीट कर दिए गए।

– राफेल लड़ाकू विमानों को भारतीय वायुसेना में औपचारिक रूप से शामिल किया गया। इस अवसर पर अंबाला एयरबेस पर आयोजित कार्यक्रम में सर्वधर्म प्रार्थना सभा भी आयोजित की गयी।

– दूरसंचार कंपनी वोडाफोन-आइडिया की वीआई के नाम से रिब्रांडिंग की गयी।

– विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने रूस में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन की बैठक में हिस्सा लिया। इस दौरान अलग से उनकी चीनी विदेश मंत्री के साथ भी बैठक हुई। भारत-चीन के बीच एलएसी पर जारी विवाद के बीच यह मुलाकात काफी महत्वपूर्ण रही। इस दौरान दोनों देशों ने पांच बिंदुओं पर सहमति वाला वक्तव्य भी जारी किया।

– संसद के मानसून सत्र की हंगामेदार शुरुआत हुई। कोरोना काल में विभिन्न प्रोटोकॉल का पालन करते हुए सत्र के दौरान राज्यसभा और लोकसभा की कार्यवाही अलग-अलग समय पर हुई। संसद सत्र से पहले सभी सांसदों और संसद परिसर के कर्मचारियों का कोरोना टेस्ट भी कराया गया। दोनों सदनों में कई विधेयक पारित किये गये हालांकि सबसे ज्यादा हंगामा कृषि विधेयकों को लेकर हुआ।

– भारत ने संयुक्त राष्ट्र में चीन को झटका देते हुए आर्थिक व सामाजिक परिषद की संस्था में जगह बना ली है। भारत अब अगले चार साल के लिए महिलाओं की स्थिति को लेकर

बने आयोग ‘सीएसडब्ल्यू’ का सदस्य बन गया है। इस संस्था का सदस्य बनने के लिए भारत के अलावा चीन व अफगानिस्तान दौड़ में थे।

– एनडीए उम्मीदवार डॉ. हरिवंश को पुनः राज्यसभा का उपसभापति चुना गया।

– संसद सत्र के दौरान रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भारत और चीन के बीच चल रहे गतिरोध पर दोनों सदनों में बयान देकर स्थिति को स्पष्ट किया।

– संसद के नये भवन के निर्माण के लिए जारी निविदा टाटा समूह के पक्ष में रही।

– सरकार ने रक्षा क्षेत्र में स्वतः मंजूरी मार्ग से 74 प्रतिशत तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की मंजूरी दे दी। विदेशी निवेशकों को आकर्षित करने के इरादे से यह कदम उठाया गया है।

– सितम्बर माह में ही भारत ने कोरोना संक्रमण के मामलों में अमेरिका को पछाड़ कर प्रथम स्थान हासिल कर लिया।

– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित करते हुए बदलाव की ज़रूरत पर जोर दिया है। संयुक्त राष्ट्र की महासभा



को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, ‘पिछले 8-9 महीने से पूरा विश्व कोरोना वैश्विक महामारी से संघर्ष कर रहा है। इस वैश्विक महामारी से निपटने के प्रयासों में संयुक्त राष्ट्र कहाँ है? एक प्रभावशाली रिस्रॉन्स कहाँ है?’

– रेल राज्य मंत्री सुरेश अंगड़ी का कोरोना वायरस के कारण निधन हो गया।

– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फिट इंडिया अभियान के तहत विराट कोहली, मिलिंद सोमण तथा अन्य के साथ वर्चुअल संवाद किया।

– भारतीय वायुसेना की शिवांगी सिंह ने रचा इतिहास, लड़ाकू विमान राफेल उड़ाने वाली पहली महिला पायलट बनीं।

– प्रसिद्ध पार्श्व गायक एसपी बालासुब्रमण्यम का निधन। वह कोरोना के चलते पिछले काफी समय से अस्पताल में थे।

– पूर्व केंद्रीय मंत्री और वरिष्ठ भाजपा नेता जसवंत सिंह का निधन। वह पिछले काफी समय से बीमार चल रहे थे।

– गिलगित बाल्टिस्तान में चुनाव करवाने के पाकिस्तान के ऐलान पर भारत ने विरोध जताया।

– बाबरी मस्जिद विध्वंस मामले में सीबीआई की विशेष अदालत ने लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, उमा भारती और कल्याण सिंह समेत सभी को बरी किया।

इसे भी पढ़ें- इतना भी खराब नहीं रहा साल 2020, पहिंये वह घटनाएँ जो सबको खुशियाँ देकर गयीं

अक्टूबर 2020

– लॉकडाउन के बाद से बंद पड़ीं दिल्ली मेट्रो की सेवाएं शुरू हुईं।

– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्व की सबसे लंबी सुरंग अटल टनल का उद्घाटन किया।

– भारतीय सेना ने गलवान घाटी में चीन के साथ हुए संघर्ष के दौरान शहीद हुए 20 जवानों की याद में वार मेमोरियल बनाया।

– भारत ने परमाणु सक्षम शौर्य बैलिस्टिक मिसाइल के नये प्रारूप का सफल परीक्षण किया।

–दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने वायु प्रदूषण के विरुद्ध अभियान शुरू किया।

– शाहीन बाग मामले में सुप्रीम कोर्ट ने अहम फैसला सुनाते हुए कहा कि अपने अधिकारों की मांग के लिए दूसरों के अधिकारों को बाधित नहीं किया जा सकता।

– केंद्रीय मंत्री रामविलास पासवान का लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया।

– भारत ने एंटी रेडिएशन मिसाइल रुद्रम का सफल परीक्षण किया।

– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वर्गीय राजमाता विजयाराजे सिंधिया की जयंती पर 100 रुपए का सिक्का जारी किया।

– 15 अक्टूबर से सिनेमा हाल, मल्टिप्लेक्स आदि कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करते हुए खुल गये।

– बिहार विधानसभा चुनाव के लिए तीन चरणों में मतदान कराया गया। इस दौरान कोरोना संबंधी प्रोटोकॉल का पूरी तरह पालन कराया गया। बिहार चुनावों में एनडीए ने नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री उम्मीदवार घोषित कर चुनाव लड़ा और महागठबंधन ने तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री उम्मीदवार घोषित कर चुनाव लड़ा। लोक जनशक्ति पार्टी के नेता चिराग पासवान बिहार में एनडीए से अलग होकर चुनाव लड़े।

– गोवा देश का पहला ऐसा राज्य बन गया जो ग्रामीण क्षेत्रों में हर घर में नल के जरिये पानी पहुँचा रहा है।

– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वामित्व योजना के तहत प्रॉपर्टी कार्ड देने की योजना का शुभारंभ किया।

– भारत ने एंटी टैंक मिसाइल नाग का सफल परीक्षण किया।

– भारत और अमेरिका के बीच 2 प्लस 2 वार्ता के दौरान कई अहम समझौते हुए।

– गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री केशुभाई पटेल का 92 वर्ष की उम्र में निधन।

– कर्नाटक सरकार ने सरकारी कर्मचारियों के फिल्मों, धारावाहिकों और विज्ञापन में काम करने पर रोक लगाई।

– इस बार शारदीय नवरात्रि, दशहरा आदि सीमित दायरे में मनाये गये। दशहरे पर

रामलीलाओं का बड़ा आयोजन नहीं हुआ। हालांकि अयोध्या में पहले से ज्यादा भव्य रामलीला का आयोजन हुआ लेकिन दर्शक इसे वर्चुअली ही देख सकते थे।

– 31 अक्टूबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की पहली सी-प्लेन सर्विस का शुभारंभ किया। यह सेवा गुजरात में शुरू हुई। देश का पहला सी-प्लेन स्टैच्वू ऑफ यूनिटी से साबरमती तक उड़ेगा।

नवंबर 2020

– अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में जोए बाइडेन ने वर्तमान राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को हराया। इसके साथ ही भारतीय मूल की कमला हैरिस ने अमेरिकी उपराष्ट्रपति पद पर निर्वाचित होकर नया इतिहास रच दिया। इसी के साथ ही कमला हैरिस उपराष्ट्रपति पद पर पहुँचने वाली पहली महिला, पहली अश्वेत और पहली एशियन-अमेरिकन व्यक्ति बन गयीं।

– भारत सरकार ने ऑनलाइन मीडिया और ओटीटी प्लेटफॉर्म को सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के तहत लाने का फैसला किया।

– बिहार विधानसभा चुनावों में करीबी मुकाबले में महागठबंधन पिछड़ा। एनडीए में सर्वाधिक सीटें लाने वाली भाजपा ने मुख्यमंत्री पद की कमान एक बार फिर नीतीश कुमार को सौंपी। बिहार में इस बार सुशील कुमार मोदी की जगह भाजपा ने तार किशोर प्रसाद और रेणु देवी के रूप में दो उपमुख्यमंत्री पद हासिल किये।

– दीपावली से पहले एनजीटी ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में वायु प्रदूषण की गंभीर स्थिति को देखते हुए पटाखों की बिक्री और उन्हें चलाने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया।

– केंद्रीय मंत्रिमंडल ने आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना को अपनी मंजूरी प्रदान की।

– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा का अनावरण किया।

– फिल्म कलाकार आसिफ बसरा धर्मशाला स्थित अपने घर पर मृत पाये गये।

– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ब्रिक्स सम्मेलन में हिस्सा लिया और आत्मनिर्भर भारत अभियान को विश्व के कल्याण की दिशा में भी उठाया गया कदम बताया। वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से हुए इस सम्मेलन के दौरान चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग भी उपस्थित रहे।

– प्रख्यात बंगाली अभिनेता सौमित्र चटर्जी का 85 वर्ष की उम्र में निधन हो गया।

– नवंबर में उच्चतम न्यायालय ने एक महत्वपूर्ण निर्णय में कहा कि सीबीआई जाँच के लिए राज्य की सहमति जरूरी है।

– आरबीआई दुनिया का पहला ऐसा केंद्रीय बैंक बन गया जिसके ट्विटर पर एक मिलियन फॉलोवर हैं।

– भारत सरकार ने अलीएक्सप्रेस समेत 42 और चाइनीज मोबाइल एप्स पर प्रतिबंध लगाया।

– असम के पूर्व मुख्यमंत्री तरुण गोगोई का निधन।

– चक्रवाती तूफान निवार ने तमिलनाडु और पुडुचेरी में मचाया उत्पात, तटीय क्षेत्रों में हुआ नुकसान।

– लक्ष्मी विलास बैंक और डीबीएस बैंक इंडिया लिमिटेड के विलय को केंद्रीय

मंत्रिमंडल की मिली मंजूरी।

– उत्तर प्रदेश सरकार ने लव जिहाद विरोधी विधेयक को मंजूरी प्रदान की।

– कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सांसद अहमद पटेल का निधन।

– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोरोना वैक्सीन की प्रगति का जायजा लेने के लिए तीन फॉर्मा कंपनियों के लैब का दौरा किया।

– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी में देव दीपावली पर्व पर आयोजित कार्यक्रमों में हिस्सा लिया।

– नवंबर अंत में पंजाब और हरियाणा के किसान केंद्र सरकार के कृषि सुधार कानूनों का विरोध करते हुए दिल्ली की सीमाओं पर आ डटे और सरकार से इन कानूनों को वापस लेने की माँग करने लगे।

दिसंबर 2020

– लगभग साल भर तक कोरोना वायरस से जूझती दुनिया को दिसम्बर माह की शुरुआत में तब बड़ी खुशखबरी मिली जब ब्रिटेन फाइजर-बायोएन्टेक की कोविड वैक्सीन को मंजूरी देने वाला पहला देश बन गया।

– आरबीआई ने एचडीएफसी बैंक पर नये क्रेडिट कार्ड जारी करने और नई डिजिटल सेवाओं को शुरू करने पर रोक लगाई।

– माँ अन्नापूर्णा देवी की मूर्ति को 100 साल बाद स्वदेश लाया गया। इस मूर्ति को वाराणसी के प्राचीन मंदिर से सन् 1913 में चुरा लिया गया था।

– उच्चतम न्यायालय ने सभी पुलिस स्टेशनों के अलावा सीबीआई, एनआईए, ईडी और एनसीबी के दफ्तर में सीसीटीवी कैमरा लगाने के आदेश दिये।

– एमडीएच मसालों के मालिक और मसाला किंग के नाम से मशहूर महाशय धर्मपाल गुलाटी का 98 वर्ष की उम्र में निधन हुआ।

– कृषि कानूनों के विरोध में विपक्ष के भारत बंद का पंजाब को छोड़ कर देशभर में कोई ज्यादा असर नहीं दिखा।

– नेपाल और चीन ने माउंट एवरेस्ट की ऊँचाई को संशोधित किया।

– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आगरा मेट्रो प्रोजेक्ट की शुरुआत की।

– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोरोना वैक्सीन को लेकर सर्वदलीय बैठक की।

– वन नेशन वन राशन कार्ड योजना 9 राज्यों में सफलतापूर्वक लागू।

– पत्रकार और लेखक मंगलेश डबराल का निधन।

– लक्षद्वीप पहला ऐसा केंद्र शासित प्रदेश बना जहाँ खेती पूरी तरह ऑर्गेनिक रूप से होती है।

– ग्रेटर हैदराबाद नगर निगम चुनावों में भाजपा ने जोरदार प्रदर्शन किया। तेलंगाना में सत्तारूढ़ पार्टी टीआरएस की सीटें पहले से आधी हो गयीं जबकि ओवैसी की पार्टी को भी नुकसान उठाना पड़ा। निगम चुनावों में भाजपा ने अपने पूरे केंद्रीय नेतृत्व को प्रचार में उतार दिया था।

– अनुच्छेद 370 हटाये जाने के बाद केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में पहले चुनाव

हुए। जिला विकास परिषद चुनावों में भाजपा अकेले दम पर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी हालांकि गठबंधन के रूप में गुपकार अलायंस अधिकांश जिला विकास परिषदों में बहुमत हासिल करने में सफल रहा।

– सरकार ने कोरोना वैक्सीन लगाने के अभियान का खाका प्रस्तुत किया।

– पश्चिम बंगाल दौरे पर गये भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के काफिले पर हुए हमले को लेकर भाजपा और बंगाल सरकार के बीच तीखी बयानबाजी हुई। नड्डा पर हमले को गंभीरता से लेते हुए केंद्रीय गृह मंत्रालय ने बंगाल के तीन आईपीएस अधिकारियों को केंद्र में वापस बुलाने का फैसला सुनाया लेकिन ममता सरकार इसके लिए राजी नहीं हुई।

– केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के पश्चिम बंगाल दौरे के दौरान तृणमूल कांग्रेस के वरिष्ठ नेता शुभेंदु अधिकारी पार्टी छोड़कर भाजपा में आ गये।

– अंकिता रैना ने आईटीएफ डबल्स टाइटल जीता।

– भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना ने संयुक्त रूप से वर्चुअली चिलाहटी-हल्दीबाड़ी रेल लिंक का उद्घाटन किया। इस मार्ग पर 55 साल बाद रेल सेवा बहाल हुई।

– कांग्रेस के वयोवृद्ध और वरिष्ठ नेता मोती लाल वोरा का निधन।

– नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने सत्तारूढ़ गठबंधन में चल रहे विवादों के बीच संसद को भंग करने का ऐलान किया।

– ब्रिटेन में कोरोना वायरस के नये स्वरूप का पता चलते ही भारत समेत कई देशों ने ब्रिटेन से आने वाली उड़ानों पर रोक लगाई।

– अमेरिकी राष्ट्रपति ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को %लीजन ऑफ मेरिट% पुरस्कार दिया। यह पुरस्कार केवल सरकार या राष्ट्र प्रमुख को दिया जाता है।

– मध्य प्रदेश की शिवराज सरकार ने लव जिहाद विरोधी अध्यादेश को मंजूरी प्रदान की।

– प्रधानमंत्री ने जम्मू-कश्मीर के निवासियों के लिए सेहत योजना का शुभारंभ किया।
– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत की पहली ड्राइवर रहित मेट्रो ट्रेन को हरी झंडी दिखाई।

– आईसीसी के दशक के सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट बने विराट कोहली, महेंद्र सिंह धोनी को 'क्रिकेट भावना' सम्मान मिला

– तिरुवनंतपुरम की 21 वर्षीय आर्या राजेंद्रन बनीं भारत की सबसे कम उम्र की मेयर
– प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह को संबोधित किया। स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री के बाद नरेंद्र मोदी एएमयू में संबोधन देने वाले दूसरे प्रधानमंत्री बने।

– कर्नाटक विधान परिषद के उपाध्यक्ष एस. एल. धर्मे गौड़ा का शव रेल पटरी पर मिला। धर्मे गौड़ा के साथ हाल ही में विधान परिषद में कांग्रेस सदस्यों ने किया था दुर्व्यवहार।

– दक्षिण भारतीय फिल्मों के सुपरस्टार रजनीकांत ने स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का हवाला देते हुए कहा कि वह अब राजनीतिक पार्टी का गठन नहीं करेंगे। इससे पहले उन्होंने दिसंबर अंत तक नयी राजनीतिक पार्टी का गठन करने और तमिलनाडु विधानसभा चुनाव लड़ने का ऐलान किया था।

‘अल्पसंख्यक’ की परिभाषा दोबारा निर्धारित हो, जरूरतमंदों को ही मिलें विशेष अधिकार



ब. रमेश कुमार

समय की दरकार है कि अल्पसंख्यक अधिकार देने की संज्ञा की दोबारा से व्याख्या की जाए। 18 दिसंबर को 1992 से अल्पसंख्यक अधिकार दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। अल्पसंख्यक अधिकार दिवस की घोषणा संयुक्त राष्ट्र द्वारा हुई।

अल्पसंख्यक अब कौन है और किसे कहा जाए, इसको नए सिरे से रेखांकित करने जरूरत है। हिंदुस्तान में आज अल्पसंख्यक जैसे अधिकार की हकदार कई जातियां हैं। अगड़ी जातियों में भी कुछ लोग ऐसे हैं जिनकी दयनीय स्थिति अल्पसंख्यकों से कम नहीं है। भारत में अल्पसंख्यक सिस्टम जाति आधार पर है। बीस वर्ष पूर्व मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, पारसी जैन आदि की स्थिति निश्चित रूप से ज्यादा अच्छी नहीं थी। तब इन्हें अल्पसंख्यकों का दर्जा दिया गया। सरकारी सहायताएं हों, चाहे खुद के किए संघर्ष से इनकी ज्यादातर आबादी अब संपन्न और खुशहाल है। चार अगड़ी जातियां जो कभी संपन्न हुआ करती थीं, उनकी स्थिति अब कहां जा पहुंची है, शायद किसी को बताने की जरूरत नहीं।

दरअसल, ये समय की दरकार है कि अल्पसंख्यक अधिकार देने की संज्ञा की दोबारा से व्याख्या की जाए। 18 दिसंबर को 1992 से अल्पसंख्यक अधिकार दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। अल्पसंख्यक अधिकार दिवस की घोषणा संयुक्त राष्ट्र द्वारा हुई। इस दिवस की घोषणा के पीछे मकसद बहुत ईमानदार और दूरगामी सोच थी। इराक में पारसी, पाकिस्तान में हिंदुओं और हिंदुस्तान में मुस्लिमों की दशा तब कुछ ज्यादा अच्छी नहीं थी। वह कई सामाजिक बुराईयों से ग्रस्त थे। वह भी औरों की तरह मुख्य धारा से जुड़े इसलिए इस दिवस की परिकल्पना की गयी। अल्पसंख्यक अधिकार दिवस घोषित होने के बाद इनके लिए सभी देशों की हुकूमतों ने कई कल्याणकारी योजनाएं शुरू कीं, विशेष कर सरकारी सेवाओं में आरक्षण के साथ इनकी भागीदारी सुनिश्चित हुई। नतीजा ये निकला कि भारत जैसे देश में मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, पारसी व जैनियों के जीवन में अप्रत्याशित बदलाव हुआ। नौकरियों और काम-धंधों में सरकार ने इनको सहायता दी।

वहीं, पाकिस्तान जैसे मुल्क में अल्पसंख्यक दर्जा प्राप्त हिंदुओं की दशा आज भी किसी से छिपी नहीं, वहां उन्हें हिकारत भरी नजरों से

देखा जाता है। नालों की सफाई, कूड़ा-करकट व सफाई कर्मचारियों की भर्ती में ही इन्हें शामिल किया जाता है और दूसरी सेवाओं में इन्हें जरा भी मौका नहीं दिया जाता। दूसरी तस्वीर ये है कि भारत में मुस्लिमों के लिए कोई भेदभाव नहीं किया जाता। व्यापार, सेवा, राजनीति, मान-सम्मान सभी में बराबर का मौका प्रदान होता है। जैनी भी अल्पसंख्यक माने जाते हैं, जो अब पूरी तरह से संपन्न हैं। बड़े व्यवसायों में उनका डंका बजता है। वह अब खुद दूसरों को रोजगार देते हैं। भारत में अल्पसंख्यकों के लिए अल्पसंख्यक आयोग के अलावा अनेकों संस्थाएं अलग-अलग काम करती हैं।

अल्पसंख्यक का मतलब निर्धन, असहाय, गरीब, जरूरतमंद लोगों को आगे लाना और उनके अधिकारों की रक्षा करना होता है। भारत में अल्पसंख्यक कहे जाने वाले मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, पारसी और जैन सभी विकास की मुख्य धारा से जुड़कर अब कदमताल कर रहे हैं। ये अच्छी बात है, सभी खुशहाल हों, हाथ फैला कर मांगने की जरूरत किसी को न पड़े। वहीं, एक और तस्वीर हमारे सामने है। हिंदुस्तान में आज भी कई ऐसी पिछड़ी जनजातियाँ हैं जो अल्पसंख्यक जैसे अधिकारों की हकदार हैं। बंजारा, घुमंतू उनमें प्रमुख हैं। इनकी आबादी करीब पच्चीस लाख से ज्यादा है। जिनका ना कोई वर्तमान है, ना कोई भविष्य। चौक-चौराहे, सड़क व बाजारों आदि जगहों पर तमाशा दिखा कर अपना पेट पालते हैं। बंजारों की जिंदगी खुद एक तमाशा बन कर सिमट गई है। तरक्की और विकास तो दूर की बात है, मात्र दो जून की रोटी और चंद सिक्कों के लिए कोड़ों से अपने आपको तब तक पीटना पड़ता है जब तक देखने वाले की आँखें गीली न हों जाएं।

कागजों में पूर्व की सरकारों के पास कल्याणकारी योजनाओं की कभी कमी नहीं रही। लेकिन सभी सफेद हाथी साबित हुई, उन योजनाओं का लाभ घुमन्तु जनजातियों को कभी नहीं मिल सका। इनके लिए जो

कुछ भी हुआ है वह कागज तक ही सीमित रहा है। ऐसी तस्वीरें देखने के बाद लगता है कि जिस विकास और संपन्नता के हम दावे करते हैं वे धरातल पर वास्तव में थोथरे ही हैं। अल्पसंख्यकों में अभी जितनी जातियां शामिल हैं उन्हें सुविधाएँ मिलती रहें, कोई विरोध नहीं करता। पर, उन जाति-समुदायों का भी ख्याल होना चाहिए, जो वास्तव में सुविधाओं का इंतजार कर रहे हैं। कभी कभार ऐसा भी प्रतीत होता है कि विकास की रोशनी जिन तक पहुंचनी चाहिए, उन तक पहुंची ही नहीं? ऐसा लगता है कि विकास कुछ खास वर्गों तक ही सिमट गया है? देश में पिछड़ी अनगिनत जातियां हैं जिनके पास समस्याओं का अंबार है। अशिक्षा, गरीबी, सामाजिक दुस्वारियां, इनकी असल पहचान है। इनके पक्ष में आवाज उठाने वालों का भी अकाल है।

अल्पसंख्यकों के अलावा जनजातियों की स्थिति के अध्ययन के लिए फरवरी 2006 में काका कालेलकर आयोग बनाया गया था जिसके अध्यक्ष बालकिशन रेनके बनाए गए थे। उस समय जनजातियों के लिए केंद्र सरकार के पास इनको राहत देने के लिए कोई कार्य योजना नहीं थी। इसलिए बाद में उन्हें राज्यों के अधीन कर दिया गया। पहली और तीसरी पंच वर्षीय योजना तक इनके लिए प्रावधान था, लेकिन किसी कारणवश वह विकास राशि खर्च नहीं हो सकी, तो इन्हें उस सूची से ही हटा लिया गया। जबकि, रिपोर्ट में साफ कहा गया था कि कुछ जातियां अल्पसंख्यकों और अनुसूचित जाति, जनजाति एवं पिछड़ी जातियों से भी पिछड़ी हैं। जोर था कि उनके लिए भी अलग से कोई प्रावधान होना चाहिए। 2017 में मोदी सरकार ने इनके लिए दोबारा से सर्वे कराया है। उम्मीद है अब कोई मुकम्मल हल निकलेगा। फिर भी अतीत के इतिहास का जिक्र न करते हुए समय की दरकार यही है कि पिछड़े लोगों के आर्थिक सुधार के लिए भी अल्पसंख्यकों जैसे विशेष पैकेज दिए जाएं, तभी अल्पसंख्यक अधिकार दिवस के सही में मायने निकल सकेंगे।

(कहानी)

त्रिया-चरित्र



सेठ लगनदास जी के जीवन की बगिया फलहीन थी। कोई ऐसा मानवीय, आध्यात्मिक या चिकित्सात्मक प्रयत्न न था जो उन्होंने न किया हो। यों शादी में एक पवीत्रत के कायल थे मगर जरूरत और आग्रह से विवश होकर एक-दो नहीं पाँच शादियाँ कीं, यहाँ तक कि उम्र के चालीस साल गुजए गए और अँधेरे घर में उजाला न हुआ। बेचारे बहुत रंजीदा रहते। यह धन-संपत्ति, यह ठाट-बाट, यह वैभव और यह ऐश्वर्य क्या होंगे। मेरे बाद इनका क्या होगा, कौन इनको भोगेगा। यह ख्याल बहुत अफसोसनाक था। आखिर यह सलाह हुई कि किसी लड़के को गोद लेना चाहिए। मगर यह मसला पारिवारिक झगड़ों के कारण के सालों तक स्थगित रहा। जब सेठ जी ने देखा कि बीवियों में अब तक बदस्तूर कशमकश हो रही है तो उन्होंने नैतिक साहस से काम लिया और होनहार अनाथ लड़के को गोद ले लिया। उसका नाम रखा गया मगनदास। उसकी उम्र पाँच-छ-साल से ज्यादा न थी। बला का जहीन और तमीजदार। मगर औरतें सब कुछ कर सकती हैं, दूसरे के बच्चे को अपना नहीं समझ सकतीं। यहाँ तो पाँच औरतों का साझा था। अगर एक उसे प्यार करती तो बाकी चार औरतों का फज्र था कि उससे नफरत करें। हाँ, सेठ जी उसके साथ बिलकुल अपने लड़के की सी मुहब्बत करते थे। पढ़ाने को मास्टर रक्खें, सवारी के लिए घोड़े। रईसी ख्याल के आदमी थे। राग-रंग का सामान भी मुहैया था। गाना सीखने का लड़के ने शौक किया तो उसका भी इंतजाम हो गया।

गरज जब मगनदास जवानी पर पहुँचा तो रईसाना दिलचास्पियों में उसे कमाल हासिल था। उसका गाना सुनकर उस्ताद लोग कानों पर हाथ रखते। शहसवार ऐसा कि दौड़ते हुए घोड़े पर सवार हो जाता। डील-डौल, शक्ल सूरत में उसका-सा अलबेला जवान दिल्ली में कम होगा। शादी का मसला पेश हुआ। नागपुर के करोड़पति सेठ मक्खनलाल बहुत लहराये हुए थे। उनकी लड़की से शादी हो गई। धूमधाम का जिक्र किया जाए तो किस्सा वियोग की रात से भी लम्बा हो जाए। मक्खनलाल का उसी शादी में दीवाला निकल गया। इस वक्त मगनदास से ज्यादा ईश्या के योग्य आदमी और कौन होगा? उसकी जिन्दगी की बहार उमंगों पर भी और मुरादों के फूल अपनी शबनमी ताजगी में खिल-खिलकर हुस्न और ताजगी का समाँ दिखा रहे थे। मगर तकदीर की देवी कुछ और ही सामान कर रही थी। वह सैर-सपाटे के इरादे से जापान गया हुआ था कि दिल्ली से खबर आई कि ईश्वर ने तुम्हें एक भाई दिया है। मुझे इतनी खुशी है कि ज्यादा असें तक जिन्दा न रह सकूँ। तुम बहुत जल्द लौट आओ।

मगनदास के हाथ से तार का कागज छूट गया और सर में ऐसा चक्कर आया कि जैसे किसी ऊँचाई से गिर पड़ा है।

मगनदास का किताबी ज्ञान बहुत कम था। मगर स्वभाव की सज्जनता से वह खाली हाथ न था। हाथों की उदारता ने, जो समृद्धि का वरदान है, हृदय को भी उदार बना दिया था। उसे घटनाओं की इस कायापलट से दुख तो जरूर हुआ, आखिर इन्सान ही था, मगर उसने धीरज से काम लिया और एक आशा और भय की मिली-जुली हालत में देश को रवाना हुआ। रात का वक्त था। जब अपने दरवाजे पर पहुँचा तो नाच-गाने की महफिल सजी देखी। उसके कदम आगे न बढ़े लौट पड़ा और एक दुकान के चबूतरे पर बैठकर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये। इतना तो उसे यकीन था कि सेठ जी उसके साथ भी भलमनसी और मुहब्बत से पेश आयेंगे बल्कि शायद अब और भी कृपा करने लगे। सेठानियाँ भी अब उसके साथ गैरों का-सा वर्ताव न करेंगी। मुमकिन है मज़ली बहू जो इस बच्चे की खुशनसीब माँ थीं, उससे दूर-दूर रहें मगर बाकी चारों सेठानियों की तरफ से सेवा-सत्कार में कोई शक नहीं था। उनकी डाह से वह फायदा उठा सकता था। ताहम उसके स्वाभिमान ने गवारा न किया कि जिस घर में मालिक की हैसियत से रहता था उसी घर में अब एक आश्रित की हैसियत से जिन्दगी बसर करे। उसने फैसला कर लिया कि सब यहाँ रहना न मुनासिब है, न मसलहत। मगर जाऊँ कहाँ? न कोई ऐसा फन सीखा, न कोई ऐसा इल्म हासिल किया जिससे रोजी कमाने की सूरत पैदा होती। रईसाना दिलचस्पियाँ उसी वक्त तक कद्र की निगाह से देखी जाती हैं जब तक कि वे रईसों के आभूषण रहें। जीविका बन कर वे सम्मान के पद से गिर जाती है। अपनी रोजी हासिल करना तो उसके लिए कोई ऐसा मुश्किल काम न था। किसी सेठ-साहूकार के यहाँ मुनीम बन सकता था, किसी कारखाने की तरफ से एजेंट हो सकता था, मगर उसके कन्धे पर एक भारी जुआ रक्खा हुआ था, उसे क्या करे। एक बड़े सेठ की लड़की जिसने लाड़-प्यार में परिवर्षित पाई, उससे यह कंगाली की तकलीफें क्योंकर झेली जाएँगी क्या मक्खनलाल की लाड़ली बेटी एक ऐसे आदमी के साथ रहना पसन्द करेगी जिसे रात की रोटी का भी ठिकाना नहीं ! मगर इस फिक्र में अपनी जान क्यों खपाऊँ। मैंने अपनी मर्जी से शादी नहीं की मैं बराबर इनकार करता रहा। सेठ जी ने जबर्दस्ती मेरे पैरों में बेड़ी डाली है। अब वही इसके जिम्मेदार हैं। मुझ से कोई वास्ता नहीं। लेकिन जब उसने दुबारा ठंडे दिल से इस मसले पर गौर किया तो वचाव की कोई सूरत नजर न आई।

आखिकार उसने यह फैसला किया कि पहले नागपुर चलूँ, जरा उन महारानी के तौर-तरीके को देखूँ, बाहर-ही-बाहर उनके स्वभाव की, मिजाज की जाँच करूँ। उस वक्त तय करूँगा कि मुझे क्या करके चाहिये। अगर रईसी की बू उनके दिमाग से निकल गई है और मेरे साथ रूखी रोटियाँ खाना उन्हें मंजूर है, तो इससे अच्छा फिर और क्या, लेकिन अगर वह अमीरी ठाट-बाट के हाथों बिकी हुई हैं तो मेरे लिए रास्ता साफ है। फिर मैं हूँ और दुनिया का गम। ऐसी जगह जाऊँ जहाँ किसी परिचित की सूरत सपने में भी न दिखाई दे। गरीबी की जिल्लत नहीं रहती, अगर अजनबियों में जिन्दगी बसरा की जाए। यह जानने-पहचानने वालों की कनखियाँ और कनबतियाँ हैं जो गरीबी को यन्त्रणा बना देती हैं। इस तरह दिल में जिन्दगी का नक्शा बनाकर मगनदास अपनी मर्दाना हिम्मत के भरोसे पर नागपुर की तरफ चला, उस मल्लाह की तरह जो किशती और पाल के बगैर नदी की उमड़ती हुई लहरों में अपने को डाल दे।

शाम के वक्त सेठ मक्खनलाल के सुंदर बगीचे में सूरज की पीली किरणें मुरझाये हुए फूलों से गले मिलकर विदा हो रही थीं।

बाग के बीच में एक पक्का कुआँ था और एक मौलसिरी का पेड़। कुएँ के मुँह पर अंधेरे की नीली-सी नकाब थी, पेड़ के सिर पर रोशनी की सुनहरी चादर। इसी पेड़ में एक नौजवान थका-माँदा कुएँ पर आया और लोटे से पानी भरकर पीने के बाद जगत पर बैठ गया। मालिन ने पूछा- कहाँ जाओगे? मगनदास ने जवाब दिया कि जाना तो था बहुत दूर, मगर यहीं रात हो गई। यहाँ कहाँ ठहरने का ठिकाना मिल जाएगा?

मालिक- चले जाओ सेठ जी की धर्मशाला में, बड़े आराम की जगह है।

मगनदास- धर्मशाले में तो मुझे ठहरने का कभी संयोग नहीं हुआ। कोई हर्ज न हो तो यहीं पड़ा रहूँ। यहाँ कोई रात को रहता है?

मालिक- भाई, मैं यहाँ ठहरने को न कहूँगी। यह बाई जी की बैठक है। झरोखे में बैठकर सेर किया करती हैं। कहीं देख-भाल लें तो मेरे सिर में एक बाल भी न रहे।

मगनदास- बाई जी कौन?

मालिक- यही सेठ जी की बेटी। इन्दिरा बाई।

मगनदास का किताबी ज्ञान बहुत कम था। मगर स्वभाव की सज्जनता से वह खाली हाथ न था। हाथों की उदारता ने, जो समृद्धि का वरदान है, हृदय को भी उदार बना दिया था। उसे घटनाओं की इस कायापलट से दुख तो जरूर हुआ, आखिर इन्सान ही था, मगर उसने धीरज से काम लिया और एक आशा और भय की मिली-जुली हालत में देश को रवाना हुआ। रात का वक्त था। जब अपने दरवाजे पर पहुँचा तो नाच-गाने की महफिल सजी देखी। उसके कदम आगे न बढ़े लौट पड़ा और एक दुकान के चबूतरे पर बैठकर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये। इतना तो उसे यकीन था कि सेठ जी उसके साथ भी भलमनसी और मुहब्बत से पेश आयेंगे बल्कि शायद अब और भी कृपा करने लगे। सेठानियाँ भी अब उसके साथ गैरों का-सा वर्ताव न करेंगी। मुमकिन है मज़ली बहू जो इस बच्चे की खुशनसीब माँ थीं, उससे दूर-दूर रहें मगर बाकी चारों सेठानियों की तरफ से सेवा-सत्कार में कोई शक नहीं था। उनकी डाह से वह फायदा उठा सकता था। ताहम उसके स्वाभिमान ने गवारा न किया कि जिस घर में मालिक की हैसियत से रहता था उसी घर में अब एक आश्रित की हैसियत से जिन्दगी बसर करे।

मगनदास- यह गजरे उन्हीं के लिए बना रही हो क्या?

मालिन- हाँ, और सेठ जी के यहाँ है ही कौन? फूलों के गहने बहुत पसन्द करती हैं।

मानदास- शौकीन औरत मालूम होती हैं?

मालिक- भाई, यही तो बड़े आदमियों की बातें हैं। वह शौक न करें तो हमारा-तुम्हारा निबाह कैसे हो। और

धन है किस लिए। अकेली जान पर दस लौंडियाँ हैं। सुना करती थी कि भगवान आदमी का हल भूत जोतता है वह आँखों देखा। आप-ही-आप पंखा चलने लगे। आप-ही-आप सारे घर में दिन का-सा उजाला हो जाए। तुम झूठ समझते होगे, मगर मैं आँखों देखी बात कहती हूँ।

ललित मोदी

उस गर्व की चेतना के साथ जो किसी नादान आदमी के सामने अपनी जानकारी के बयान करने में होता है, बूढ़ी मालिन अपनी सर्वज्ञता का प्रदर्शन करने लगी। मगनदास ने उकसाया- होगा भाई, बड़े आदमी की बातें निराली होती हैं। लक्ष्मी के बस में सब कुछ है। मगर अकेली जान पर दस लौंडियाँ? समझ में नहीं आता।

ललित मोदी

मालिन ने बुढ़ापे के चिड़चिड़ेपन से जवाब दिया- तुम्हारी समझ मोटी हो तो कोई क्या करे ! कोई पान लगाती है, कोई पंखा झलती है, कोई कपड़े पहनाती है, दो हजार रुपये में तो सेजगाड़ी आयी थी, चाहो तो मुँह देख लो, उस पर हवा खाने जाती हैं। एक बंगालिन गाना-बजाना सिखाती है, मेम पढ़ाने आती है, शास्त्री जी संस्कृत पढ़ाते हैं, कागद पर ऐसी मूरत बनाती हैं कि अब बोली और अब बोली। दिल की रानी हैं, बेचारी के भाग फूट गए। दिल्ली के सेठ लगनदास के गोद लिये हुए लड़के से ब्याह हुआ था। मगर राम जी की लीला सत्तर बरस के मुर्दे को लड़का दिया, कौन पतियायेगा। जब से यह सुनावनी आई है, तब से बहुत उदास रहती है। एक दिन रोती थीं। मेरे सामने की बात है। बाप ने देख लिया। समझाने लगे। लड़की को बहुत चाहते हैं। सुनती हूँ दामाद को यहीं बुलाकर रक्खेंगे। नारायन करे, मेरी रानी दूधों नहाय पतों फले। माली मर गया था, उन्होंने आड़ न ली होती तो घर भर के टुकड़े माँगती।

ललित मोदी

मगनदास ने एक ठण्डी साँस ली। बेहतर है, अब यहाँ से अपनी इज्जत-आबरू लिये हुए चल दो। यहाँ मेरा निबाह न होगा। इन्दिरा रईसजादी है। तुम इस काबिल नहीं हो कि उसके शौहर बन सको। मालिन से बोला- ता धर्मशाले में जाता हूँ। जाने वहाँ खाट-वाट मिल जाती है कि नहीं, मगर रात ही तो काटनी है किसी तरह कट ही जाएगी रईसों के लिए मखमली गद्दे चाहिए, हम मजदूरों के लिए पुआल ही बहुत है। यह कहकर उसने लुटिया उठाई, डण्डा सम्हाला और दर्दभरे दिल से एक तरफ चल दिया।

ललित मोदी

उस वक्त इन्दिरा अपने झरोखे पर बैठी हुई इन दोनों की बातें सुन रही थी। कैसा संयोग है कि स्त्री को स्वर्ग की सब सिद्धियाँ प्राप्त हैं और उसका पति आवरों की तरह मारा-मारा फिर रहा है। उसे रात काटने का ठिकाना नहीं।

ललित मोदी

मगनदास निराश विचारों में डूबा हुआ शहर से बाहर निकल आया और एक सराय में ठहरा जो सिर्फ इसलिए मशहूर थी, कि वहाँ शराब की एक दुकान थी। यहाँ आस-पास से मजदूर लोग आ-आकर अपने दुख को भुलाया करते थे। जो भूले-भटके मुसाफिर यहाँ ठहरते, उन्हें होशियारी और चौकसी का व्यावहारिक पाठ मिल जाता था। मगनदास थका-माँदा ही, एक पेड़ के नीचे चादर बिछाकर सो रहा और जब सुबह को नींद खुली तो उसे किसी पीर-औलिया के ज्ञान की सजीव दीक्षा का चमत्कार दिखाई पड़ा जिसकी पहली मंजिल वैराग्य है। उसकी छोटी-सी पोटली, जिसमें दो-एक कपड़े और थोड़ा-सा रास्ते का खाना और लुटिया-डोर बंधी हुई थी, गायब हो गई। उन कपड़ों को छोड़कर जो उसके बदर पर थे अब उसके पास कुछ भी न था और भूख, जो कंगाली में और भी तेज हो जाती है, उसे बेचैन कर रही थी। मगर हढ़ स्वभाव का आदमी था, उसने किस्मत का रोना रोया किसी तरह गुजर करने की तदबीरें सोचने लगा। लिखने और गणित में उसे अच्छा अभ्यास था मगर इस हैसियत में उससे फायदा उठाना असम्भव था। उसने संगीत का बहुत अभ्यास किया था। किसी रसिक रईस के दरबार में उसकी क़द्र हो सकती थी। मगर उसके पुरुषोचित अभिमान ने इस पेशे को अख्खितार करने इजाजत न दी। हाँ, वह आला दर्जे का घुड़सवार था और यह फन मजे में पूरी शान के साथ उसकी रोजी का साधन बन सकता था यह पक्का इरादा करके उसने हिम्मत से कदम आगे बढ़ाये। ऊपर से देखने पर यह

बात यकीन के काबिल नही मालूम होती मगर वह अपना बोझ हलका हो जाने से इस वक्त बहुत उदास नहीं था। मर्दाना हिम्मत का आदमी ऐसी मुसीबतों को उसी निगाह से देखता है,जिसमे एक होशियार विद्यार्थी परीक्षा के प्रश्नों को देखता है उसे अपनी हिम्मत आजमाने का, एक मुश्किल से जूझने का मौका मिल जाता है उसकी हिम्मत अजनाने ही मजबूत हो जाती है। अकसर ऐसे मार्के मर्दाना हौसले के लिए प्रेरणा का काम देते हैं। मगनदास इस जोश.से कदम बढ़ाता चला जाता था कि जैसे कायमाबी की मंजिल सामने नजर आ रही है। मगर शायद वहाँ के घोड़ो ने शाररत और बिगडैलपन से तौबा कर ली थी या वे स्वाभाविक रुप बहुत मजे मे धीमे- धीमे चलने वाले थे। वह जिस गांव में जाता निराशा को उकसाने वाला जवाब पाता आखिरकार शाम के वक्त जब सूरज अपनी आखिरी मंजिल पर जा पहुँचा था, उसकी कठिन मंजिल तमाम हुई। नागरघाट के ठाकुर अटलसिंह ने उसकी चिन्ता मो समाप्त किया।

यह एक बड़ा गाँव था। पक्के मकान बहुत थे। मगर



ललित मोदी

उनमें प्रेतात्माएँ आबाद थीं। कई साल पहले प्लेग ने आबादी के बड़े हिस्से का इस क्षणभंगुर संसार से उठाकर स्वर्ग में पहुच दिया था। इस वक्त प्लेग के बचे-खुचे वे लोग गांव के नौजवान और शौकीन जर्मींदार साहब और हल्के के कारगुजार ओर रोबीले थानेदार साहब थे। उनकी मिली-जुली कोशिशों से गाँव मे सतयुग का राज था। धन दौलत को लोग जान का अजाब समझते थे। उसे गुनाह की तरह छुपाते थे। घर-घर में रुपये रहते हुए लोग कर्ज ले-लेकर खाते और फटेहालों रहते थे। इसी में निबाह था। काजल की कोठरी थी, सफेद कपड़े पहनना उन पर धब्बा लगाना था। हुकूमत और जबर्दस्ती का बाजार गर्म था। अहीरों को यहाँ आँजन के लिए भी दूध न था। थाने में दूध की नदी बहती थी। मवेशीखाने के मुहर्रिर दूध की कुल्लियाँ करते थे। इसी अंधेरनगरी को मगनदास ने अपना घर बनाया। ठाकुर साहब ने असाधारण उदारता से काम लेकर उसे रहने के लिए एक माकन भी दे दिया। जो केवल बहुत व्यापक अर्थों में मकान कहा जा सकता था। इसी झोंपड़ी में वह एक हफ्ते से जिन्दगी के दिन काट रहा है। उसका चेहरा जर्द है। और कपड़े मैले हो रहे हैं। मगर ऐसा मालूम होता है कि उस अब इन बातों की अनुभूति ही नही रही। जिन्दा है मगर जिन्दगी रुखसत हो गई है। हिम्मत और हौसला मुश्किल को आसान कर सकते हैं आँधी और तुफान से बचा सकते हैं मगर चेहरे को खिला सकना उनके सामर्थ्य से बाहर है टूटी हुई नाव पर बैठकरी मल्हार गाना हिम्मत काम नही हिमाकत का काम है।

एक रोज जब शाम के वक्त वह अंधरे मे खाट पर पड़ा हुआ था। एक औरत उसके दरवारजे पर आकर भीख मांगने लगी। मगनदास का आवाज पिरचित जान पडी। बहार आकर देखा तो वही चम्पा मालिन थी। कपड़े तार-तार, मुसीबत की रोती हुई तसबीर। बोला-मालिन ? तुम्हारी यह क्या हालत है। मुझे पहचानती हो।?

मालिन ने चौंकरक देखा और पहचान गई। रोकर बोली

-बेटा, अब बताओ मेरा कहाँ ठिकाना लगे? तुमने मेरा बना बनाया घर उजाड़ दिया न उसे दिन तुमसे बात करती ने मुझे पर यह बिपत पड़ती। बाई ने तुम्हें बैठे देख लिया, बातें भी सुनी सुबह होते ही मुझे बुलाया और बरस पड़ी नाक कटवा लूंगी, मुंह में कालिख लगवा दूंगी, चुडैल, कुटनी, तू मेरी बात किसी गैर आदमी से क्यों चलाये? तू दूसरों से मेरी चर्चा करे? वह क्या तेरा दामाद था, जो तू उससे मेरा दुखड़ा रोती थी? जो कुछ मुंह मे आया बकती रही मुझसे भी न सहा गया। रानी रुठेंगी अपना सुहाग लेंगी ! बोली-बाई जी, मुझसे कसूर हुआ, लीजिए अब जाती हूँ छींकते नाक कटती है तो मेरा निबाह यहाँ न होगा। ईश्वर ने मुंह दिया हैं तो आहार भी देगा चार घर से माँगूंगी तो मेरे पेट को हो जाएगा।। उस छोकरी ने मुझे खड़े खड़े निकलवा दिया। बताओ मैने तुमसे उसकी कौन सी शिकायत की थी? उसकी क्या चर्चा की थी? मै तो उसका बखान कर रही थी। मगर बड़े आदमियों का गुस्सा भी बड़ा होता है। अब बताओ मै किसकी होकर रहूँ? आठ दिन इसी दिन तरह टुकड़े माँगते हो गये हैं। एक भतीजी उन्हीं के यहाँ लौंडियों में नौकर थी, उसी



ललित मोदी

दिन उसे भी निकाल दिया। तुम्हारी बदौलत, जो कभी न किया था, वह करना पड़ा तुम्हें कहो का दोष लगाऊं किस्मत में जो कुछ लिखा था, देखना पड़ा।

ललित मोदी

मगनदास सन्नाटे में जो कुछ लिखा था। आह मिजाज का यह हाल है, यह घमण्ड, यह शान ! मालिन का इल्मीनन दिलाया उसके पास अगर दौलत होती तो उसे मालामाल कर देता सेठ मक्खनलाल की बेटी को भी मालूम हो जाता कि रोजी की कूँजी उसी के हाथ में नहीं है। बोला-तुम फिर्न न करो, मेरे घर मे आराम से रहो अकेले मेरा जी भी नहीं लगता। सच कहो तो मुझे तुम्हारी तरह एक औरत की तलाशा थी, अच्छ़ा हुआ तुम आ गयीं।

ललित मोदी

मालिन ने आंचल फैलाकर असीम दिया- बेटा तुम जुग-जुग जियों बड़ी उम्र हो यहाँ कोई घर मिले तो मुझे दिलवा दो। मैं यही रहूँगी तो मेरी भतीजी कहाँ जाएगी। वह बेचारी शहर में किसके आसरे रहेगी। मगनलाल के खून में जोश आया। उसके स्वाभिमान को चोट लगी। उन पर यह आफत मेरी लायी हुई है। उनकी इस आवारागर्दी को जिम्मेदार मैं हूँ। बोला-कोई हर्ज न हो तो उसे भी यहीं ले आओ। मैं दिन को यहाँ बहुत कम रहता हूँ। रात को बाहर चारपाई डालकर पड़ रहा करूँगा। मेरी वहज से तुम लोगों को कोई तकलीफ न होगी। यहाँ दूसरा मकान मिलना मुश्किल है यही झोपड़ा बड़ी मुश्किलो से मिला है। यह अंधेरनगरी है जब तुम्हरी सुभीता कहीं लग जाय तो चली जाना।

ललित मोदी

मगनदास को क्या मालूम था कि हजरते इश्क उसकी जबान पर बैठे हुए उससे यह बात कहला रहे है। क्या यह ठीक है कि इश्क पहले माशूक के दिल में पैदा होता है?

ललित मोदी

नागपुर इस गाँव से बीस मील की दूरी पर था। चम्पा उसी दिन चली गई और तीसरे दिन रम्भा के साथ लौट आई। यह उसकी भतीजी का नाम था। उसक आने से

ललित मोदी

झोंपड़ें में जान सी पड़ गई। मगनदास के दिमाग में मालिन की लड़की की जो तस्वीर थी उसका रम्भा से कोई मेल न था वह सौंदर्य नाम की चीज का अनुभवी जौहरी था मगर ऐसी सूरत जिसपर जवानी की ऐसी मस्ती और दिल का चैन छीन लेनेवाला ऐसा आकर्षण हो उसने पहले कभी नहीं देखा था। उसकी जवानी का चाँद अपनी सुनहरी और गम्भीर शान के साथ चमक रहा था। सुबह का वक्त था मगनदास दरवाजे पर पड़ा ठण्डी-ठण्डी हवा का मजा उठा रहा था। रम्भा सिर पर घड़ा रखके पानी भरने को निकली मगनदास ने उसे देखा और एक लम्बी साँस खींचकर उठ बैठा। चेहरा-मोहरा बहुत ही मोहम। ताजे फूल की तरह खिला हुआ चेहरा आंखों में गम्भीर सरलता मगनदास को उसने भी देखा। चेहरे पर लाज की लाली दौड़ गई। प्रेम ने पहला वार किया।

ललित मोदी

मगनदास सोचने लगा-क्या तकदीर यहाँ कोई और गुल खिलाने वाली है! क्या दिल मुझे यहां भी चैन न लेने देगा। रम्भा, तू यहाँ नाहक आयी, नाहक एक गरीब का खून तेरे सर पर होगा। मैं तो अब तेरे हाथों बिक चुका, मगर क्या तू भी मेरी हो सकती है? लेकिन नहीं, इतनी जल्दबाजी ठीक नहीं दिल का सौदा सोच-समझकर करना चाहिए। तुमको अभी जब्ब करना होगा। रम्भा सुन्दरी है मगर झूठे मोती की आब और ताब उसे सच्चा नहीं बना सकती। तुम्हें क्या खबर कि उस भोली लड़की के कान प्रेम के शब्द से परिचित नहीं हो चुके है? कौन कह सकता है कि उसके सौन्दर्य की वाटिका पर किसी फूल चुननेवाले के हाथ नही पड़ चुके है? अगर कुछ दिनों की दिलबस्तगी के लिए कुछ चाहिए तो तुम आजाद हो मगर यह नाजुक मामला है, जरा सम्हल के कदम रखना। पेशेवर जातों मे दिखाई पड़नेवाला सौन्दर्य अकसर नैतिक बन्धनों से मुक्त होता है।

ललित मोदी

तीन महीने गुजर गये। मगनदास रम्भा को ज्यों ज्यों बारीक से बारीक निगाहों से देखता त्यों-त्यों उस पर प्रेम का रंग गाढा होता जाता था। वह रोज उसे कुँए से पानी निकालते देखता वह रोज घर में झाडु देती, रोज खाना पकाती आह मगनदास को उन ज्वार की रोटियां में मजा आता था, वह अच्छे से अच्छे व्यंजनों में, भी न आया था। उसे अपनी कोठरी हमेशा साफ सुधरी मिलती न जाने कौन उसके बिस्तर बिछा देता। क्या यह रम्भा की कृपा थी? उसकी निगाहें शर्मीली थी उसने उसे कभी अपनी तरफ चंचल आंखो स ताकते नही देखा। आवाज कैसी मीठी उसकी हंसी की आवाज कभी उसके कान में नही आई। अगर मगनदास उसके प्रेम में मतवाला हो रहा था तो कोई ताज्जुब की बात नही थी। उसकी भूखी निगाहें बेचैनी और लालसा में डुबी हुई हमेशा रम्भा को दुर्‍वां करतीं। वह जब किसी गाँव को जाता तो मीलों तक उसकी जिद्दी और बेताब आँखे मुड़-मूड़कर झोंपड़े के दरवाजे की तरफ आती। उसकी ख्याति आस पास फैल गई थी मगर उसके स्वभाव की मुसीबत और उदारह्यता से अकसर लोग अनुचित लाभ उठाते थे इन्साफपसन्द लोग तो स्वागत सत्कार से काम निकाल लेते और जो लोग ज्यादा समझदार थे वे लगातार तकाजों का इन्तजार करते चूँकि मगनदास इस फन को बिलकुल नहीं जानता था। बावजूद दिन रात की दौड़ धूप के गरीबी से उसका गला न छुटता। जब वह रम्भा को चक्की पीसते हुए देखता तो गेहूँ के साथ उसका दिल भी पिस जाता था। वह कुएँ से पानी निकालती तो उसका कलेजा निकल आता। जब वह पड़ोस की औरत के कपड़े सीती तो कपड़ो के साथ मगनदास का दिल छिद जाता। मगर कुछ बस था न काबू।

ललित मोदी

मगनदास की हृदयभेदी दृष्टि को इसमें तो कोई संदेह नहीं था कि उसके प्रेम का आकर्षण बिलकुल बेअसर नही है वर्ना रम्भा की उन वफा से भरी हुई खातिरदरियों की तुक कैसा बिठाता वफा ही वह जादू है रुप के गर्व का सिर नीचा कर सकता है। मगर। प्रेमिका के दिल में बैठने का माद्दा उसमें बहुत कम था। कोई दूसरा मनचला प्रेमी अब तक अपने वशीकरण में कामायाब हो चुका होता लेकिन मगनदास ने दिल आशकि का पाया था और जबान माशूक की।

ललित मोदी

एक रोज शाम के वक्त चम्पा किसी काम से बाजार गई हुई थी और मगनदास हमेशा की तरह चारपाई पर

शेष पृष्ठ १० पर....

पड़ा सपने देख रहा था। रम्भा अदभूत छटा के साथ आकर उसके समने खडी हो गई। उसका भोला चेहरा कमल की तरह खिला हुआ था। और आखों से सहानुभूति का भाव झलक रहा था। मगनदास ने उसकी तरफ पहले आश्चर्य और फिर प्रेम की निगाहों से देखा और दिल पर जोर डालकर बोला–आओं रम्भा, तुम्हें देखने को बहुत दिन से आँखें तरस रही थीं।

रम्भा ने भोलेपन से कहा–मैं यहां न आती तो तुम मुझसे कभी न बोलेते।

मगनदास का हौसला बढा, बोला–बिना मर्जी पाये तो कुत्ता भी नही आता।

रम्भा मुस्कराई, कली खिल गई–मै तो आप ही चली आई।

मगनदास का कलेजा उछल पड़ा। उसने हिम्मत करके रम्भा का हाथ पकड़ लिया और भावावेश से कॉपती हुई आवाज मे बोला–नहीं रम्भा ऐसा नही है। यह मेरी महीनों की तपस्या का फल है।

मगनदास ने बेताब होकर उसे गले से लगा लिया। जब वह चलने लगी तो अपने प्रेमी की ओर प्रेम भरी दृष्टि से देखकर बोली–अब यह प्रीत हमको निभानी होगी। पौ फटने के वक्त जब सूर्य देवता के आगमन की तैयारियाँ हो रही थी मगनदास की आँखे खुली रम्भा आटा पीस रही थी। उस शांतिपूर्ण सत्राटे में चक्की की घुमर–घुमर बहुत सुहानी मालूम होती थी और उससे सूर मिलाकर आपने प्यारे ढंग से गाती थी।

झुलनियाँ मोरी पानी में गिरी
मैं जानूँ पिया मौको मनैहैं
उलटी मनावन मोको पड़ी
झुलनियाँ मोरी पानी मे गिरी

साल भर गुजर गया। मगनदास की मुहब्बत और रम्भा के सलीके न मिलकर उस वीरान झोंपड़े को कुंज बाग बना दिया। अब वहां गायें थी। फूलों की क्यारियाँ थीं और कई देहाती ढंग के मोढ़े थे। सुख–सुविधा की अनेक चीजे दिखाई पड़ती थी।

एक रोज सुबह के वक्त मगनदास कही जाने के लिए तैयार हो रहा था कि एक सम्भ्रांत व्यक्ति अंग्रेजी पोशाक पहने उसे दूढंता हुआ आ पहुंचा और उसे देखते ही दौड़कर गले से लिपट गया। मगनदास और वह दोनो एक साथ पढ़ा करते थे। वह अब वकील हो गया। था। मगनदास ने भी अब पहचाना और कुछ झेंपता और कुछ झिझकता उससे गले लिपट गया। बड़ी देर तक दोनों दोस्त बातें करते रहे। बातें क्या थीं घटनाओं और संयोगो की एक लम्बी कहानी थी। कई महीने हुए सेठ लगन का छोटा बच्चा चेचक की नजर हो गया। सेठ जी ने दुख क मारे आत्महत्या कर ली और अब मगनदास सारी जायदाद, कोठी इलाके और मकानों का एकछत्र स्वामी था। सेठानियों में आपसी झगड़े हो रहे थे। कर्मचारियों न गबन को अपना ढंग बना रक्खा था। बडी सेठानी उसे बुलाने के लिए खुद आने को तैयार थी, मगर वकील साहब ने उन्हे रोका था। जब मदनदास न मुस्काराकर पुछा–तुम्हीं क्योंकर मालूम हुआ कि मै। यहाँ हूँ तो वकील साहब ने फरमाया–महीने भर से तुम्हारी टोह में हूँ। सेठ मक्ख्रलाल ने अता–पता बतलाया। तूम दिल्ली पहुँचें और मैंने अपना महीने भर का बिल पेश किया।

रम्भा अधीर हो रही थी। कि यह कौन है और इनमे क्या बाते हो रही है? दस बजते–बजते वकील साहब मगनदास से एक हप्ते के अन्दर आने का वादा लेकर विदा हुए उसी वक्त रम्भा आ पहुँची और पूछने लगी–यह कौन थे। इनका तुमसे क्या काम था?

मगनदास ने जवाब दिया– यमराज का दूत।

रम्भा–क्या असगुन बकते हो!

मगन–नहीं नहीं रम्भा, यह असगुन नही है, यह सचमुच मेरी मौत का दूत था। मेरी खुशियों के बाग को रौंदने वाला मेरी हरी–भरी खेती को उजाड़ने वाला रम्भा मैंने

तुम्हारे साथ दगा की है, मैंने तुम्हे अपने फरेब क जाल में फाँसया है, मुझे माफ करो। मुहब्बत ने मुझसे यह सब करवाया मैं मगनसिंह ठाकूर नहीं हूँ। मैं सेठ लगनदास का बेटा और सेठ मक्खनलाल का दामाद हूँ।

मगनदास को डर था कि रम्भा यह सुनते ही चौक पड़ेगी ओर शायद उसे जालिम, दगाबाज कहने लगे। मगर उसका ख्याल गलत निकला! रम्भा ने आंखो में आँसू भरकर सिर्फ इतना कहा–तो क्या तुम मुझे छोड़कर चले जाओगे?

मगनदास ने उसे गले लगाकर कहा–हाँ। रम्भा–क्यों?

मगन–इसलिए कि इन्दिरा बहुत होशियार सुन्दर और धनी है।

रम्भा–मैंं तुम्हें न छोड़ूंगी। कभी इन्दिरा की लौंडी थी, अब उनकी सौत बनूँगी। तुम जितनी मेरी मुहब्बत करोगे। उतनी इन्दिरा की तो न करोगे, क्यों?

मगनदास इस भोलेपन पर मतवाला हो गया। मुस्कराकर बोला–अब इन्दिरा तुम्हारी लौंडी बनेगी, मगर सुनता हूँ वह बहुत सुन्दर है। कहीं मै उसकी सूरत पर लुभा न जाऊँ। मर्दों का हाल तुम नही जानती मुझे अपने ही से डर लगता है।

रम्भा ने विश्वासभरी आंखो से देखकर कहा–क्या तुम भी ऐसा करोगे? उँह जो जी में आये करना, मै तुम्हें न छोड़ूंगी। इन्दिरा रानी बने, मै लौंडी हूँगी, क्या इतने पर भी मुझे छोड़ दोगें?

मगनदास की आँखे डबडबा गयीं, बोला–प्यारी, मैंने फैसला कर लिया है कि दिल्ली न जाऊँगा यह तो मै कहने ही न पाया कि सेठ जी का स्वर्गवास हो गया। बच्चा उनसे पहले ही चल बसा था। अफसोस सेठ जी के आखिरी दर्शन भी न कर सका। अपना बाप भी इतनी मुहब्ब्त नही कर सकता। उन्होने मुझे अपना वारिस बनाया हैं। वकील साहब कहते थे। कि सेठारियों मे अनबन है। नौकर चाकर लूट मार–मचा रहे हैं। वहाँ का यह हाल है और मेरा दिल वहाँ जाने पर राजी नहीं होता दिल तो यहाँ है वहाँ कौन जाए।

रम्भा जरा देर तक सोचती रही, फिर बोली–तो मै तुम्हें छोड़ दूँगीं इतने दिन तुम्हारे साथ रही। जिन्दगी का सुख लुटा अब जब तक जिऊँगी इस सूख का ध्यान करती रहूँगी। मगर तुम मुझे भूल तो न जाओगे? साल में एक बार देख लिया करना और इसी झोपड़े में।

मगनदास ने बहुत रोका मगर आँसू न रुक सके बोले–रम्भा, यह बाते ने करो, कलेजा बैठ जाता है। मै तुम्हे छोड़ नही सकता इसलिए नही कि तुम्हारे उपर कोई एहसान है। तुम्हारी खातिर नहीं, अपनी खातिर वह शक्ति वह प्रेम, वह आनन्द जो मुझे यहाँ मिलता है और कहीं नही मिल सकता। खुशी के साथ जिन्दगी बसर हो, यही मनुष्य के जीवन का लक्ष्य है। मुझे ईश्वर ने यह खुशी यहाँ दे रक्खी है तो मै उसे क्यों छोड़ूँ? धन–दौलत को मेरा सलाम है मुझे उसकी हवस नहीं है। रम्भा फिर गम्भीर स्वर में बोली–मै तुम्हारे पाँव की बेड़ी न बनूँगी। चाहे तुम अभी मुझे न छोड़ो लेकिन थोड़े दिनों में तुम्हारी यह मुहब्बत न रहेगी।

मगनदास को कोड़ा लगा। जोश से बोला–तुम्हारे सिवा इस दिल में अब कोई और जगह नहीं पा सकता। रात ज्यादा आ गई थी। अष्टमी का चाँद सोने जा चुका था। दोपहर के कमल की तरह साफ आसमन में सितारे खिले हुए थे। किसी खेत के रखवाले की बासुरी की आवाज, जिसे दूरी ने तासीर, सत्राटे न सुरीलापन और अँधेरे ने आत्मिकता का आकर्षण दे दिया। था। कानो में आ जा रही थी कि जैसे कोई पवित्र आत्मा नदी के किनारे बैठी हुई पानी की लहरों से या दूसरे किनारे के खामोश और अपनी तरफ खींचनेवाले पेड़ो से अपनी जिन्दगी की गम की कहानी सुना रही है।

मगनदास सो गया मगर रम्भा की आंखों में नींद न आई।

सुबह हुई तो मगनदास उठा और रम्भा पुकारने लगा। मगर रम्भा रात ही को अपनी चाची के साथ वहां से कही चली गयी मगनदास को उसे मकान के दरो दीवार पर एक हसरत–सी छायी हुई मालूम हुई कि जैसे घर की जान निकल गई हो। वह घबराकर उस कोठरी में गया जहां रम्भा रोज चक्की पीसती थी, मगर अफसोस आज चक्की एकदम निश्चल थी। फिर वह कुँए की तरह दौड़ा गया लेकिन ऐसा मालूम हुआ कि कुँए ने उसे निगल जाने के लिए अपना मुँह खोल दिया है। तब वह बच्चो की तरह चीख उठा रोता हुआ फिर उसी झोपड़ी में आया। जहाँ कल रात तक प्रेम का वास था। मगर आह, उस वक्त वह शोक का घर बना हुआ था। जब जरा आँसू थमे तो उसने घर में चारों तरफ निगाह दौड़ाई। रम्भा की साड़ी अरगनी पर पड़ी हुई थी। एक पिटारी में वह कंगन रक्खा हुआ था। जो मगनदास ने उसे दिया था। बर्तन सब रक्खे हुए थे, साफ और सुधरे। मगनदास सोचने लगा–रम्भा तूने रात को कहा था–मै तुम्हे छोड़ दुर्गी। क्या तूने वह बात दिल से कही थी? मैंने तो समझा था, तू दिल्लीगी कर रही हैं। नहीं तो मुझे कलेजे में छिपा लेता। मैं तो तेरे लिए सब कुछ छोड़े बैठा था। तेरा प्रेम मेरे लिए सक कुछ था, आह, मै यों बेचैन हूं, क्या तू बेचैन नही है? हाय तू रो रही है। मुझे यकीन है कि तू अब भी लौट आएगी। फिर सजीव कल्पनाओं का एक जमघट उसक सामने आया– वह नाजुक अदाएँ वह मतवाली आँखें वह भोली भाली बातें, वह अपने को भूली हुई–सी मेहरबानियाँ वह जीवन दायी। मुस्कान वह आशिकों जैसी दिलजोइयाँ वह प्रेम का नाश, वह हमेशा खिला रहने वाला चेहरा, वह लचक–लचककर कुँए से पानी लाना, वह इन्ताजार की सूरत वह मस्ती से भरी हुई बेचैनी–यह सब तस्वीरें उसकी निगाहों के सामने हमरतनाक बेताबी के साथ फिरने लगी। मगनदास ने एक ठण्डी सॉस ली और आसुओं और दर्द की उमड़ती हुई नदी को मर्दाना जब्त से रोककर उठ खड़ा हुआ। नागपुर जाने का पक्का फैसला हो गया। तक्रिये के नीच से सन्दूक की कुँजी उठायी तो कागज का एक टुकड़ा निकल आया यह रम्भा की विदा की चिट्ठी थी–

प्यारे,

मै बहुत रो रही हूँ मेरे पैर नहीं उठते मगर मेरा जाना जरूरी है। तुम्हे जागाऊँगी। तो तुम जाने न दोगे। आह कैसे जाऊं अपने प्यारे पति को कैसे छोड़ूँ! किस्मत मुझसे यह आनन्द का घर छुड़वा रही है। मुझे बेवफा न कहना, मै तुमसे फिर कभी मिलूँगी। मै जानती हूँ। कि तुमने मेरे लिए यह सब कुछ त्याग दिया है। मगर तुम्हारे लिए जिन्दगी में। बहुत कुछ उम्मीदे हैं मैं अपनी मुहब्बत की धुन में तुम्हें उन उम्मीदो से क्यों दूर रक्खूँ! अब तुमसे जुदा होती हूँ। मेरी सुध मत भूलना। मैं तुम्हें हमेशा याद रखूगीं। यह आनन्द के लिए कभी न भूलेंगे। क्या तूम मुझे भूल सकोगें?

तुम्हारी प्यारी
रम्भा

मगनदास को दिल्ली आए हुए तीन महीने गुजर चुके हैं। इस बीच उसे सबसे बड़ा जो निजी अनुभव हुआ वह यह था कि रोजी की फि़क्र और धन्धों की बहुतायत से उमड़ती हुई भावनाओं का जोर कम किया। जा सकता है। डेढ साल पहले का बफि़क्र नौजवान अब एक समझदार और सूझ–बूझ रखने वाला आदमी बन गया था। सागर घाट के उस कुछ दिनों के रहने से उसे रਿਆया की इन तकलीफो का निजी ज्ञान हो गया, था जो कारिन्दों और मुख्तारो की सख्त्रियों की बदौलत उन्हे उठानी पड़ती है। उसने उसे रियासत के इन्तजाम में बहुत मदद दी और गो कर्मचारी दबी जबान से उसकी शिकायत करते थे। और अपनी किस्मतो और जमाने क उलट फेर को कोसने थे मगर रਿਆया खुशा थी। हाँ, जब वह सब धंधों से फुरसत पाता तो एक भोली भाली सूरतवाली लड़की उसके खयाल के पहलू में आ बैठती और थोड़ी देर के लिए सागर घाट का वह हरा भरा झोपड़ा और उसकी मस्ति्या आँखें के सामने आ जातीं। सारी बाते एक सुहाने सपने की तरह याद आ आकर उसके दिल को मसोसने लगती लेकिन कभी कभी खूद बखुद–उसका ख्याल इन्दिरा की तरफ भी जा पहुँचता गो उसके दिल मे रम्भा की वही जगह थी मगर किसी

तरह उसमे इन्दिरा के लिए भी एक कोना निकल आया था। जिन हालातो और आफतो ने उसे इन्दिरा से बेजार कर दिया था वह अब रुखसत हो गयी थीं। अब उसे इन्दिरा से कुछ हमदर्दी हो गयी । अगर उसके मिजाज में घमण्ड है, हुकूमत है तकल्लूफ है शान है तो यह उसका कसूर नहीं यह रईसजादो की आम कमजोरियां है यही उनकी शिक्षा है। वे बिलकुल बेबस और मजबूर है। इन बदते हुए और संतुलित भावो के साथ जहां वह बेचैनी के साथ रम्भा की याद को ताजा किया करता था वहा इन्दिरा का स्वागत करने और उसे अपने दिल में जगह देने के लिए तैयार था। वह दिन दूर नहीं था जब उसे उस आजमाइश का सामना करना पड़ेगा। उसके कई आत्मीय अमीराना शान–शौकत के साथ इन्दिरा को विदा कराने के लिए नागपुर गए हुए थे। मगनदास की बतियत आज तरह तरह के भावो के कारण, जिनमें प्रतीक्षा और मिलन की उत्कंठा विशेष थी, उचाट सी हो रही थी। जब कोई नौकर आता तो वह सम्हल बैठता कि शायद इन्दिरा आ पहुँची आखिर शाम के वक्त जब दिन और रात गले मिले रहे थे, जनानखाने में जोर शारे के गाने की आवाजों ने बहू के पहुचने की सूचना दी।

सुहाग की सुहानी रात थी। दस बज गये थे। खुले हुए हवादार सहन में चाँदनी छिटकी हुई थी, वह चाँदनी जिसमें नशा है। आरजू है। और खिंचाव है। गमलों में खिले हुए गुलाब और चम्पा के फूल चाँद की सुनहरी रोशनी में ज्यादा गम्भीर ओर खामोश नजर आते थे। मगनदास इन्दिरा से मिलने के लिए चला। उसके दिल से लालसाएँ जरुर थी मगर एक पीड़ा भी थी। दर्शन की उत्कण्ठा थी मगर प्यास से खोली। मुहब्बत नही प्राणों को खिचाव था जो उसे खींचे लिए जाताथा। उसके दिल में बैठी हुई रम्भा शायद बार–बार बाहर निकलने की कोशिश कर रही थी। इसीलिए दिल में धड़कन हो रही थी। वह सोने के कमरे के दरवाजे पर पहुंचा रेशमी पर्दा पड़ा हुआ था। उसने पर्दा उठा दिया अन्दर एक औरत सफेद साड़ी पहने खड़ी थी। हाथ में चन्द खूबसूरत चूड़ियों के सिवा उसके बदन पर एक जेवर भी न था। ज्योही पर्दा उठा और मगनदास ने अन्दरी हम रक्खा वह मुस्काराती हुई उसकी तरफ बढी मगनदास ने उसे देखा और चकित होकर बोला।
“रम्भा!” और दोनो प्रेमावेश से लिपट गये। दिल में बैठी हुई रम्भा बाहर निकल आई थी।

साल भर गुजरने के वाद एक दिन इन्दिरा ने अपने पति से कहा। क्या रम्भा को बिलकुल भूल गये? कैसे बेवफा हो! कुछ याद है, उसने चलते वक्त तुमसे या बिनती की थी?

मगनदास ने कहा– खूब याद है। वह आवाज भी कानों में गूज रही है। मैं रम्भा को भोली –भाली लड़की समझता था। यह नहीं जानता था कि यह त्रिया चरित्र का जादू है। मै अपनी रम्भा का अब भी इन्दिरा से ज्यादा प्यार करता हूं। तुम्हे डाह तो नहीं होती?

इन्दिरा ने हंसकर जवाब दिया डाह क्यों हो। तूम्हारी रम्भा है तो क्या मेरा गनसिंह नहीं है। मैं अब भी उस पर मरती हूं।

दूसरे दिन दोनों दिल्ली से एक राष्ट्रीय समारोह में शरीक होने का बहाना करके रवाना हो गए और सागर घाट जा पहुंचें। वह झोपड़ा वह मुहब्बत का मन्दिर वह प्रेम भवन फूल और हिरयाली से लहरा रहा था चम्पा मालिन उन्हें वहाँ मिली। गांव के जर्मींदार उनसे मिलने के लिए आये। कई दिन तक फिर मगनसिह को घोड़े निकालना पड़ें । रम्भा कुए से पानी लाती खाना पकाती। फिर चक्की पीसती और गाती। गाँव की औरते फिर उससे अपने कुर्ते और बच्चो की लेसदार टोपियां सिलाती है। हा, इतना जरुर कहती कि उसका रंग कैसा निखर आया है, हाथ पावं कैसे मुलायम यह पड़ गये है किसी बड़े घर की रानी मालूम होती है। मगर स्वभाव वही है, वही मीठी बोली है। वही मुरौवत, वही हँसमुख चेहरा।

इस तरह एक हफते इस सरल और पवित्र जीवन का आनन्द उठाने के बाद दोनो दिल्ली वापस आये और अब दस साल गुजरने पर भी साल में एक बार उस झोपड़े के नसीब जागते हैं। वह मुहब्बत की दीवार अभी तक उन दोनो प्रेमियों को अपनी छाया में आराम देने के लिए खड़ी है।

अध्यात्म

क्रांति अन्तःकरण से होती है

मनुष्य नकलची है। चार्ल्स डार्विन ठीक ही कहता है कि आदमी बंदर से पैदा हुआ है। और चाहे कारण ठीक हों या न हों, मगर एक मनोवैज्ञानिक कारण तो ठीक मालूम पड़ता ही है कि आदमी बंदरों जैसा ही नकलची है। शायद बंदर भी सीख लेते हों कुछ, आदमी नहीं सीखता। आदमी बस नकल ही करता है।

ढाई हजार साल बीत गये महावीर को, अब भी कुछ लोग उसी नकल में नग्न हो जाते हैं। न तो उनमें महावीर की सुगंध मालूम होती है, न सौंदर्य मालूम होता है?, न महावीर की महिमा, न प्रसाद; कुछ भी नहीं। बस नंगे खड़े हैं। तो नंगे तो बहुत आदिवासी हैं। नग्न होने से अगर कोई तीर्थंकर होता हो, नग्न होने से अगर कोई परम ज्ञान को उपलब्ध होता हो तो सारे आदिवासी कभी के हो गये होते। यह नग्नता सिर्फ नकल है।

महावीर ने उपवास किये-किये कहना ठीक नहीं, हुए। ऐसे रस विभोर हो जाते थे अंतर्लोक में कि भूल ही जाते भोजन की बात। दिन आते, चले जाते, सुबह होती, सांझ होती, उनकी डुबकी लगी रहती समाधि में। लोगों ने देखा, महावीर उपवास करते हैं। उपवास हो रहे थे, लोगों ने देखा, उपवास करते हैं। लोग तो यही देखेंगे जो बाहर से दिखाई पड़ेगा।

और बाहर से केवल लक्षण दिखाई पड़ते हैं। बाहर से भीतर का अंतस्तल दिखाई नहीं पड़ सकता। महावीर का अंतस्तल कोन देखेगा? जो महावीर जैसा हो जाये। बुद्ध का अंतस्तल कोन देखेगा? जो बुद्ध जैसा हो जाये। बाहर से लक्षण दिखाई पड़ते हैं। इसलिए यह आज का पहला सूत्र कोहिनूर जैसा है। इतनी साफ साफ सीधी सीधी बात इस तरह कभी नहीं कही गई थी।

हमारा देखि करै नहिं कोई जगजीवन कहते हैं, जैसा हम करते हैं वैसा तुम मत करना। हमारा देखकर करोगे, मुश्किल में पड़ोगे।

जो कोई देख हमारा करिहै, अंत फजीहत होई

सिर्फ फजीहत होगी, और कुछ भी न पाओगे।

जस हम चले चले नहिं कोई, करी सो करै न सोई

जैसे हम चलते हैं वैसे मत चलना। जैसा हम करते हैं वैसा मत करना। क्योंकि जो हमें हो रहा है, जो तुम्हें दिखाई पड़ रहा है वह केवल बाह्य लक्षण है। जड़ें भीतर हैं, फूल बाहर आये हैं। तुम फूलों को बिना जड़ों के न ला सकोगे। और अगर ले आये तो बाजार से खरीदे गये कागजी फूल होंगे। उपर से चिपका लेना, मगर कागजी, कागजी फूल हैं। इनसे न कोई महावीर बनेगा है न बुद्ध न मुहम्मद, न कृष्ण न क्राइस्ट। इससे सिर्फ झूठे, थोथे, पाखंडी पैदा होते हैं। पहले भीतर की जड़ें पैदा करो, पहले बीज बोओ। लेकिन लोग जल्दी में हैं। लोग कहते हैं, बीज बोए, फिर प्रतीक्षा करें, फिर वर्षा के बादल जब आयेंगे तब आयेंगे, फिर वर्षा होगी; इतनी लंबी कोन प्रतीक्षा करे? फूल बाजार में मिलते हैं, हम ऊपर से क्यों न चिपका लें? आचरण से बचना। अंतःकरण से क्रांति होती है। अंतःकरण में जड़ें हैं। आचरण न केवल अंतःकरण में जो होता है, उसको बाहर तक लाता है। लेकिन लोग आचरण के पीछे ही चलते हैं। और जो स्वयं आचरण के पीछे चलते हैं वे दूसरों को भी समझाते हैं कि हम जैसा करते हैं वैसा करो। हमारे आचरण का अनुसरण करो।

शिरडी एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है

शिरडी के साई की प्रसिद्धि दूर दूर तक है और यह पवित्र धर्मिक स्थल महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में स्थित है। यह साई की धरती है जहां साई ने अपने चमत्कारों से लोगों को विस्मृत किया। साई का जीवन शिरडी में बीता जहां उन्होंने लोक कल्याणकारी कार्य किए।

उन्होंने अपने अनुयायियों को भक्ति और धर्म की शिक्षा दी। साई के अनुयायियों में देश के बड़े-बड़े नेता, खिलाड़ी, फिल्म कलाकार, बिजनेसमैन, शिक्षाविद समेत करोड़ों लोग शामिल हैं। शिरडी में साई का एक विशाल मंदिर है। मान्यता है कि, चाहे गरीब हो या अमीर साई के दर्शन करने इनके दरबार पहुंचा कोई भी शख्स खाली हाथ नहीं लौटता है। सभी की मुरादें और मन्त्रें पूरी होती हैं।

शिरडी के साई बाबा का वास्तविक नाम, जन्मस्थान और जन्म की तारीख किसी को पता नहीं है। हालांकि साई का जीवनकाल 1838-1918 तक माना जाता है। कई लेखकों ने साई पर पुस्तकें लिखी हैं। साई पर लगभग 40 किताबें लिखी गई हैं। शिरडी में साई कहां से प्रकट हुए यह कोई नहीं जानता। साई असाधारण थे और उनकी वृषा वहां के सीधे-सादे गांववालों पर सबसे पहले बरसी।

आज शिरडी एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। साई के उपदेशों से लगता है कि इस संत का धरती पर प्रकट होना लोगों में धर्म, जाति का भेद मिटाने और शान्ति, समानता की समृद्धि के लिए हुआ था। साई बाबा को बच्चों से बहुत स्नेह था। साई ने सदा प्रयास किया कि लोग जीवन की छोटी-छोटी समस्याओं व मुसीबतों में एक दूसरे की सहायता करें और एक दूसरे के मन में श्रद्धा और भक्ति का संचार करें। इस उद्देश्य के लिए उन्हें अपनी दिव्य शक्ति का भी प्रयोग करना पड़ा।

शिरडी में साई बाबा का पवित्र मंदिर साई की समाधि के ऊपर बनाया गया है। साई के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए इस मंदिर का निर्माण 1922 में किया गया था। साई 16 साल की उम्र में शिरडी आए और चिरसमाधि में लीन होने तक यहीं रहे। साई को लोग आध्यात्मिक गुरु और फकीर के रूप में भी जानते हैं। साई के अनुयायियों में हिंदू के साथ ही मुस्लिम भी हैं। इसका कारण है कि अपने जीवनकाल के दौरान साई मस्जिद में रहे थे जबकि उनकी समाधि को मंदिर का रूप दिया गया है। साई का मंदिर सुबह 4 बजे खुल जाता है।

सुबह की आरती 5 बजे होती है। इसके बाद सुबह 5.40 से श्रद्धालु दर्शन करना शुरू कर देते हैं जो दिनभर चलता रहता है। इस दौरान दोपहर के वक्त 12 बजे और शाम को सूर्यास्त के तुरंत बाद भी आरती की जाती है। रात 10.30 बजे दिन की अंतिम आरती के बाद एक शॉल साई की विशाल मरुति के चारो ओर लपेट दी जाती है और साई को रुद्राक्ष की माला पहनाई जाती है। इसके पात मरुति के समीप एक गिलास पानी रख दिया जाता है और फिर मच्छरदानी लगा दिया जाता है। रात 11.15 बजे मंदिर का पट बंद कर दिया जाता है।

साई के समाधि पर प्रतिदिन लाखों की तादाद में लोग आते हैं और साई की झोली में अपनी श्रद्धा और भक्ति के अनुरूप वुछ दे कर चले जाते हैं। शिरडी के साई बाबा का मंदिर अपने रिकार्ड तोड़ चढ़ावे के लिए हमेशा खबरों में भी रहता है। साल दर साल यह रिकार्ड टूटता ही जा रहा है। (संकलित)

बॉलीवुड एक्टर धर्मेन्द्र ने किसान मुद्दे पर कहा- किसानों को मिले इंसाफ, करता हूं अरदास

केन्द्र के तीन नए कृषि कानूनों के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे किसान संगठनों और सरकार के बीच सातवें दौर की बातचीत से पहले अभिनेता एवं पूर्व सांसद धर्मेन्द्र ने कहा कि वह दिल से दुआ करते हैं कि इन किसानों को आज इंसाफ मिले।



केन्द्र के तीन नए कृषि कानूनों के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे किसान संगठनों और सरकार के बीच सातवें दौर की बातचीत से पहले अभिनेता एवं पूर्व सांसद धर्मेन्द्र ने कहा कि वह दिल से दुआ करते हैं कि इन किसानों को आज इंसाफ मिले। भीषण सर्दी और बारिश के बीच हजारों किसान राष्ट्रीय राजधानी से लगी सीमाओं पर करीब एक महीने से केन्द्र

के नए कृषि कानूनों के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। धर्मेन्द्र ने ट्वीट किया, “आज, मेरे किसान भाइयों को इंसाफ मिल जाए। हाथ जोड़कर, जी जान से अरदास करता हूं, हर एक रूह को सुकून मिल जाए।” धर्मेन्द्र ने पहली बार किसान संकट पर अपने विचार व्यक्त नहीं किए हैं। इससे पहले, दिसम्बर में भी धर्मेन्द्र ने केन्द्र से कृषि कानूनों के खिलाफ

जारी प्रदर्शन का समाधान खोजने की अपील की थी।

उन्होंने ट्वीट किया था, “ मैं अपने किसान भाइयों का दर्द देख काफी दुखी हूं। सरकार को जल्द कुछ करना चाहिए।” इस साल सितम्बर में अमल में आए तीनों कानूनों को केन्द्र सरकार ने कृषि क्षेत्र में बड़े सुधार के तौर पर पेश किया है। उसका कहना है कि इन कानूनों के आने से बिचौलिए की भूमिका खत्म हो जाएगी और किसान अपनी उपज देश में कहीं भी बेच सकेंगे। हरियाणा पुलिस ने दिल्ली की तरफ जा रहे किसानों के एक समूह पर रेवाड़ी जिले के मसानी बांध के पास रविवार की शाम को आंसू गैस के गोले छोड़े थे।

किसानों ने बुधला सांगवारी गांव के पास पहले पुलिस बैरिकेड तोड़ डाले और फिर शाम में उन्होंने दिल्ली की तरफ बढ़ने की कोशिश की थी। राजस्थान, हरियाणा और कुछ अन्य स्थानों के किसान पिछले कुछ दिनों से जयपुर-दिल्ली राजमार्ग पर भी प्रदर्शन कर रहे हैं।

त्वचा पर जादू का काम करता है अंडे का मास्क



कु. शोभा

अंडा न सिर्फ हमारी सेहत को दुरुस्त रखता है बल्कि यह हमारी त्वचा की खूबसूरती के लिए भी फायदेमंद है। यह त्वचा पर जादू का काम करता है और इसे चिकना और चमकदार बनाता है। जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़ती है वैसे-वैसे त्वचा में बदलाव आना शुरू होता है। यह प्राकृतिक प्रक्रिया है। ज्यादातर युवतियां इस समस्या से निपटने के लिए और रसोईघर में मौजूद चीजों का इस्तेमाल करती हैं। सारी प्राकृतिक चीजों में संडे को भी महत्वपूर्ण माना गया है।

एक अध्ययन में यह बात सामने आई है कि अंडे में मौजूद प्रोटीन त्वचा को लचीला और जवां दिखने में मदद करता है। अंडे में मौजूद 60 विभिन्न प्रोटीन के अलावा इसमें कोलाजोन और विटामिन 'ए' भी होता है जो त्वचा पर मौजूद निशान, एक्ने, खुले रोम छिद्र और चकते को भी दूर करता है। जब भी आप अंडे का मास्क बना रहे हों, तो ध्यान रहें उसे अच्छी तरह मिला ले। अंडे को मिलाने के बाद जब सफेद झाग बनने लगे तब इसे

इस्तेमाल करें। यह झाग त्वचा पर जादू का काम करता है।

अंडे का मास्क त्वचा को चमकदार बनाता है। यह बेहद आसान तरीका है त्वचा को साफ व चमकदार रखने का। अंडे का पीला हिस्सा निकालकर अलग रख दें। सिफ सफेद हिस्से को पूरी तरह मिलाकर इस्तेमाल करें। दस से 15 मिनट इसे चेहरे पर लगा रहने दें, फिर साफ पानी से धो लें।

अगर आप एक्ने और मुंहासे से परेशान हैं, तो अंडे का मास्क बेहद कारगर है। अंडे के सफेद भाग को शहद और नींबू के रस में मिला लें। यह एक्ने से लड़ने में मदद करता है और चेहरा आकर्षक बनाता है।

अगर आपका चेहरे का रंग अलग है तो इसे साफ करने के लिए अंडे में एक चम्मच संतरे का जूस और आधा चम्मच हल्दी मिलाकर लगाने से चेहरे का रंग निखरता है और चेहरे के दाग-धब्बे दूर होते हैं। यह चेहरे को बेरंग होने से बचाता है। अगर आपकी त्वचा सूखी और बेजान है, तो अंडे में दही

और एवोकाडो मिलाकर लगाएं।

अचानक कमी चेहरे पर जलन या खुजली होने लगती है। यह परेशानी कई लोगों को होती है। ऐसे में अंडे में शहद, दही और खीरे का जूस मिलाकर लगाने से आराम मिलता है।

शहद में एंटीसेप्टिक और एंटीबैक्टीरियल चीजों मौजूद होती हैं जो त्वचा को इस समस्या से छुटकारा दिलाती हैं। खीरे का रस त्वचा को नमी देता है और साफ करता है यह मिश्रण सनबर्न चेहरे पर दरारें, एक्ने और आखों के नीचे बने काले घेरे से छुटकारा पाने में मददगार है।

अंडे की सफेदी को अगर आटे के साथ मिलाकर लगाया जाए तो यह हर प्रकार की त्वचा के लिए कारगर है। अंडे में ओटमील के साथ शहद मिलाकर चेहरे पर लगाएं। यह चेहरे को जवां दिखने में मदद करता है और चेहरे पर चमक लाता है। यह मिश्रण त्वचा को नमी देने के साथ-साथ त्वचा की मृत कोशिकाओं को हटाने में मदद करता है।

कांग्रेस के खिलाफ एनसीपी-शिवसेना रच रहे साजिश

मुंबई—महाराष्ट्र में सोनिया गांधी के नाम लिखी एक चिट्ठी से एक बार फिर से सियासत में उबाल देखने को मिल सकता है। महाराष्ट्र में मुंबई कांग्रेस के महासचिव विश्वबंधु राय ने उद्भव ठाकरे की अगुवाई वाली महाविकास अघाड़ी (शिवसेना, एनसीपी और कांग्रेस) सरकार के रवैये पर सवाल उठाए हैं और कांग्रेस के खिलाफ शिवसेना और एनसीपी की साजिश का आरोप लगाया है।

सोनिया गांधी को लिखी चिट्ठी में विश्वबंधु राय ने आरोप लगाया है कि कांग्रेस को अनदेखा किया जा रहा है और सरकार सिर्फ एनसीपी और शिवसेना चला रही है। 'महाराष्ट्र सरकार में कांग्रेस पार्टी ने एक वर्ष में क्या पाया और क्या खोया' शीर्षक से सोनिया गांधी को लिखे पत्र में मुंबई कांग्रेस महासचिव विश्वबंधु राय ने कहा कि मुंबई कांग्रेस के महासचिव का कहना है कि महाराष्ट्र की एमवीए सरकार का एक साल पूरा हो गया है। इस दौरान कांग्रेस पार्टी उद्भव सरकार में सहयोगी के



तौर पर बनी हुई है।

शिवसेना और एनसीपी महाराष्ट्र में सरकार चलाने की भूमिका में नजर आ रहे हैं। पत्र में उन्होंने आरोप लगाया कि एनसीपी दीमक की तरह कांग्रेस पार्टी को कमजोर कर रही है। अपने पत्र में कई प्वाइंट में विश्वबंधु राय ने दावा किया कि कांग्रेस पाटा के मंत्रियों को महाराष्ट्र सरकार में बड़ी संख्या में जमीनी स्तर

पर संगठन का कोई काम नहीं मिल रहा है। आम जनता के साथ ही पार्टी कार्यकर्ताओं को मंत्रियों के विभाग का पता नहीं है। उन्होंने कहा कि हमारे सहयोगी दल सोची समझी रणनीति बनाकर हमारी पार्टी को नुकसान पहुंचा रहे हैं और अपनी पार्टी को आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं। उन्होंने आगे कहा कि साल 2019 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी द्वारा किए गए चुनावी वादों पर कोई

काम नहीं किया जा रहा है। पार्टी से पलायन को रोकने के लिए कुछ ठोस कदम आवश्यक हैं। उन्होंने आगे कहा कि शिवसेना और एनसीपी को गठबंधन धर्म पर चलने के लिए हिदायत दिए जाने की भी जरूरत है।

‘महाराष्ट्र सरकार में कांग्रेस पार्टी ने एक वर्ष में क्या पाया और क्या खोया’ शीर्षक से सोनिया गांधी को लिखे पत्र में मुंबई कांग्रेस महासचिव विश्वबंधु राय ने कहा कि मुंबई कांग्रेस के महासचिव का कहना है कि महाराष्ट्र की एमवीए सरकार का एक साल पूरा हो गया है। इस दौरान कांग्रेस पार्टी उद्भव सरकार में सहयोगी के तौर पर बनी हुई है। शिवसेना और एनसीपी महाराष्ट्र में सरकार चलाने की भूमिका में नजर आ रहे हैं। पत्र में उन्होंने आरोप लगाया कि एनसीपी दीमक की तरह कांग्रेस पार्टी को कमजोर कर रही है।

देश के किसान प्रधानमंत्री मोदी पर विश्वास नहीं करते-राहुल

नई दिल्ली—कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने किसान संगठनों और सरकार के बीच नए दौर की बातचीत की पृष्ठभूमि में आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर देश के किसान विश्वास नहीं करते।

उन्होंने प्रधानमंत्री के पूर्व के कुछ बयानों का हवाला देते हुए ट्वीट किया, हर बैंक खाते में 15 लाख रुपये और हर साल दो करोड़ नौकरियां। 50 दिन दीजिए, नहीं तो.. हम कोरोना वायरस के खिलाफ 21 दिनों में युद्ध जीतेंगे। न तो कोई हमारी सीमा में घुसा है और न किसी चौकी पर कब्जा किया है। कांग्रेस नेता ने आरोप लगाया, मोदी जी के असत्याग्रह के लंबे इतिहास के कारण उन पर किसान विश्वास नहीं करते। उन्होंने ट्विटर पर ऑनलाइन सर्वेक्षण के लिए एक प्रश्न भी पोस्ट किया और जवाब के लिए चार विकल्प दिए। राहुल गांधी ने कहा, प्रधानमंत्री कृषि कानूनों को निरस्त करने से इनकार कर रहे क्योंकि वह किसान विरोधी हैं, उनको पूंजीपति चलाते हैं, अहंकारी हैं या फिर इनमें सभी (विकल्प) सही है।

गौरतलब है कि दिल्ली की विभिन्न सीमाओं पर अलग-अलग राज्यों के किसान पिछले एक महीने से अधिक समय से प्रदर्शन कर रहे हैं। वे केंद्र सरकार से तीन नए कृषि कानूनों को वापस लेने और न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की गारंटी देने की मांग कर रहे हैं। इस बीच, गतिरोध को समाप्त करने के लिये केंद्र और किसान संगठनों के बीच छठे दौर की वार्ता चल रही है।



धनखड़ को हटाने के लिए तृणमूल कांग्रेस ने राष्ट्रपति का रुख किया

कोलकाता—तृणमूल कांग्रेस ने कहा कि उसने पश्चिम बंगाल के राज्यपाल पद से जगदीप धनखड़ को हटाने के लिए राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद का रुख किया है।

पार्टी ने आरोप लगाया कि धनखड़ सार्वजनिक रूप से राज्य के प्रशासन और सरकार के खिलाफ टिप्पणी कर संवैधानिक सीमाओं का उल्लंघन कर रहे हैं। हालांकि, भाजपा का कहना है कि राज्यपाल संवैधानिक मापदंडों के तहत ही काम कर रहे हैं जबकि तृणमूल कांग्रेस भयभीत है। तृणमूल कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य सुखेंद्रु शेखर राय ने संवाददाताओं से कहा कि पार्टी सांसदों की टीम ने हाल ही में को राष्ट्रपति को पत्र भेजा जिसमें धनखड़ द्वारा हाल में ऐसे कथित उल्लंघनों की सूची दी गई है और संविधान के अनुच्छेद-156 (1) के तहत कार्रवाई करने की मांग की गई है। राय ने कहा, संविधान के अनुच्छेद-156 की धारा। के तहत राष्ट्रपति

की इच्छा तक राज्यपाल पद पर आसीन होता है। हम राष्ट्रपति से मांग करते हैं कि इस इच्छा को वापस ले जिसका अभिप्राय है कि वह इन राज्यपाल को हटाएं। उन्होंने कहा, हमने देखा है कि पिछले साल जुलाई में जब से वह राज्य में आए हैं वह नियमित रूप से ट्वीट कर रहे हैं, संवाददाता सम्मेलन कर रहे हैं और टेलीविजन चैनलों की चर्चाओं में शामिल हो रहे हैं जहां पर वह नियमित रूप से राज्य सरकार के कामकाज, हमारे अधिकारियों, मंत्रियों और मुख्यमंत्री पर टिप्पणी कर रहे हैं। यहां तक एक बार उन्होंने विधानसभा के स्पीकर के आचरण पर टिप्पणी की। उनका ऐसा प्रत्येक कदम उनके संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन है।

तृणमूल सांसद ने आरोप लगाया कि राज्य सरकार को असहज करने के लिए धनखड़ भाजपा नीत केंद्र सरकार की ओर से इस तरह के बयान दे रहे हैं। उन्होंने कहा, ऐसा

पश्चिम बंगाल के 75 साल के इतिहास में नहीं हुआ। अगर उन्हें कुछ कहना है तो वह संविधान में दिए गए तरीके से ऐसा कर सकते हैं न कि ट्वीट या प्रेस वार्ता करके। राय ने धनखड़ के उन बयानों को रेखांकित किया जिसमें उन्होंने बंगाल व्यापार सम्मेलन पर हुए खर्च का हिसाब मांगा था और 25 आईपीएस अधिकारियों को कथित धमकी देने के लिए मुख्यमंत्री से माफी की मांग की थी। उन्होंने कहा कि राज्यपाल अपने अधिकारों और सीमाओं का उल्लंघन कर रहे हैं। राय ने कहा, उन्होंने (धनखड़) कहा कि स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराना उनकी जिम्मेदारी है। वह कौन हैं? यह चुनाव आयोग का क्षेत्र है। इसी तरह कैंग वह प्राधिकार है जो बंगाल व्यापार सम्मेलन जैसे राज्य द्वारा आयोजित कार्याम पर खर्चों की जानकारी मांगे।

इस पत्र पर संसद के दोनों सदनों में पार्टी के पांच वरिष्ठ सांसदों ने हस्ताक्षर किए हैं जिनमें सुदीप बंदोपाध्याय, काकोली घोष दस्तीदार, डेरेक ओ ब्रायन और राय स्वयं शामिल हैं। एक सवाल के जवाब में राय ने कहा कि यह राज्यपाल को लेकर पार्टी द्वारा उठाया गया शुरुआती कदम है। उन्होंने कहा, स्थिति और इसपर आई प्रतिक्रिया को देखने के बाद पार्टी भविष्य का कदम तय करेगी।

तीनों काले कानून खत्म कर किसानों को नए साल की सौगात दे सरकार-कांग्रेस

नई दिल्ली—कांग्रेस ने किसान संगठनों और सरकार के बीच नए दौर की बातचीत की पृष्ठभूमि में बुधवार को कहा कि केंद्र को तीनों काले कृषि कानूनों को निरस्त कर किसानों को नए साल की सौगात देनी चाहिए। पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर देश के किसान विश्वास नहीं करते। उन्होंने प्रधानमंत्री के पूर्व के कुछ बयानों का हवाला देते हुए ट्वीट किया, हर बैंक खाते में 15 लाख रुपये और हर साल दो करोड़ नौकरियां। 50 दिन दीजिए, नहीं तो.. हम कोरोना वायरस के खिलाफ 21 दिनों में युद्ध जीतेंगे। न तो कोई हमारी सीमा में घुसा है और न किसी चौकी पर कब्जा किया है। उन्होंने कहा, मोदी के असत्याग्रह के लंबे इतिहास के कारण उन पर किसान विश्वास नहीं करते। हरियाणा प्रदेश कांग्रेस कमेटी की अध्यक्ष कुमारी सैलजा ने यहां संवाददाताओं से कहा, हम मांग कर रहे हैं कि सरकार अपना हठ छोड़े। तीनों काले कानून खत्म करें और इसके बाद नए सिरे से किसान मजदूर को नए साल की सौगात दें। सरकार के पास नई

शुरुआत का मौका है। उन्होंने यह आरोप भी लगाया कि केंद्र और हरियाणा प्रदेश की भाजपा सरकारें जनता के बीच विश्वास खो चुकी है। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा, हरियाणा में 10 से ज्यादा किसानों की मौत हो चुकी है। हरियाणा की सरकार किसानों की बात नहीं सुन रही है। बेहतर होता कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर किसानों के प्रतिनिधिमंडल के साथ प्रधानमंत्री से मुलाकात करते और उन्हें जमीनी स्थिति से अवगत कराते। सैलजा ने आरोप लगाया, सरकार कारपोरेट को गले लगाती है, लेकिन किसानों और गरीबों की नहीं सुनती।

अगर खेती का निगमीकरण किया गया तो किसान भी जीएसटी और दूसरे करों के दायरे में आ जाएगा। इससे किसान का नुकसान होगा। इसका मतलब कि यह कुछ उद्योगपतियों को फायदा पहुंचाने का प्रयास है। उत्तराखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष प्रीतम सिंह ने दावा किया, इन तीनों काले कानूनों के विरोध में किसान लगातार विरोध कर रहे हैं, लेकिन लगता है कि सरकार हठधर्मिता पर उतर चुकी है।

नेपाल ने कोरोना का टीका हासिल करने के लिए भारत से मांगी मदद

काठमांडू—नेपाल ने अपनी 20 प्रतिशत आबादी के लिये कोविड-19 का टीका हासिल करने में भारत से मदद मांगी है। मीडिया में आई खबर में यह जानकारी देते हुए बताया गया कि हिमालयी राष्ट्र में इस महामारी से अब तक 1800 से ज्यादा लोगों की जान जा चुकी है जबकि 2.6 लाख से ज्यादा लोग सांमित हो चुके हैं।

काठमांडू पोस्ट की खबर के मुताबिक नेपाल सरकार ने अपनी करीब 20 प्रतिशत आबादी को टीका देने के लिये कोविड-19 का टीका खरीदने के लिये भारत सरकार से अनुरोध किया है। अखबार ने कहा कि भारत से प्राप्त टीकों के लिये नेपाल भुगतान करेगा। भारत में ऑक्सफोर्ड एस्ट्राजेनेका और स्वदेश में विकसित भारत बायोटेक के टीके तीसरे चरण के परीक्षण के अंतिम दौर में हैं। अखबार ने स्वास्थ्य मंत्रालय के अधिकारियों के हवाले से कहा, जल्द से जल्द टीके हासिल करने के लिये सरकार ने भारत की सरकार से 20 प्रतिशत नेपालियों के लिये टीके खरीदने का अनुरोध किया है। नेपाल अन्य देशों में बने टीके हासिल करने का भी प्रयास कर रहा है। नेपाल की कोविड-19 टीका परामर्श समिति के समन्वयक डॉ. श्याम राज उप्रेती ने कहा, विभिन्न देशों और कंपनियों के करीब 15 टीके परीक्षण के तीसरे चरण में हैं। सरकार ने मदद के लिये अधिकतर देशों और खरीद के लिये कंपनियों को पत्र लिखा है।

कर्नाटक विधानपरिषद उपाध्यक्ष धर्मगौड़ा के निधन की उच्च स्तरीय जांच हो-बिरला

नई दिल्ली—लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा है कि कर्नाटक विधानपरिषद उपाध्यक्ष श्री एसएल धर्मगौड़ा के निधन की उच्च स्तरीय-निष्पक्ष जांच आवश्यक है। इस विषय में उन्होंने कहा है कि कर्नाटक विधानपरिषद उपाध्यक्ष एसएल धर्मगौड़ा के निधन की दुखद खबर से व्यथित हूं। उनके परिवार के प्रति मेरी संवेदनाएं।

पीठासीन अधिकारी के रूप में उनके साथ सदन में हुआ दुर्भाग्यपूर्ण घटनाम लोकतंत्र की गरिमा पर कठोर आघात है। उनकी मृत्यु की उच्च स्तरीय-निष्पक्ष जांच आवश्यक है। संवैधानिक संस्थाओं की प्रतिष्ठा और पीठासीन अधिकारियों की गरिमा व स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखना हम सबका दायित्व है।

शुभेंद्रु अधिकारी के भाई को नगरपालिका के प्रशासक बोर्ड के अध्यक्ष पद से हटाया गया

कोलकाता—भाजपा नेता एवं पश्चिम बंगाल के पूर्व मंत्री शुभेंद्रु अधिकारी के भाई सौमेंद्रु को पूर्व मेदिनीपुर जिले में कांठी नगरपालिका के प्रशासक बोर्ड के अध्यक्ष पद से हटा दिया गया है। सौमेंद्रु अधिकारी पूर्व मेदिनीपुर में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस के हालिया राजनीतिक कार्यामों में शामिल नहीं हुए थे। पार्टी के कुछ नेताओं का आरोप है कि पिछले दो महीने से वह अपने भाई के जनसंपर्क कार्यामों में मदद कर रहे थे। उनके एक अन्य भाई एवं तृणमूल सांसद दिव्येंद्रु अधिकारी ने इस फैसले को दुर्भाग्यपूर्ण और अनुचित बताया है। तामलुक से सांसद दिव्येंद्रु अधिकारी ने कहा कि वह पार्टी (तृणमूल कांग्रेस) के वफादार कार्यकर्ता बने रहेंगे और मुख्यमंत्री एवं तृणमूल कांग्रेस की अध्यक्ष ममता बनर्जी के सामने यह मुद्दा उठाएंगे। उन्होंने कहा, वह मेरी नेता हैं। मुझे उन पर पूरा भरोसा है। सांसद ने कहा कि वह कांठी नगरपालिका भवन से अब काम नहीं करेंगे। नगरपालिका भवन में सांसद का कार्यालय है। यह घटनाम ऐसे वक्त में हुआ है जब शुभेंद्रु अधिकारी ने कहा था, मेरे परिवार में कमल खिलेगा।